

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24 अंक - 22 फरवरी-II-2022



(पाक्षिक)

माउण्ट आबू

Rs. 8.50

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के 53वें अत्यक्तारोहण दिवस पर... विशाल डायमण्ड हॉल में वर्चुअली

प्रधानमंत्री ने किया 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान का शुभारंभ

“ पीएम बोले :-

- ब्रह्माकुमारीज के प्रयास देश को एक नई ऊर्जा और शक्ति देंगे
- त्याग और कर्तव्य भाव से करोड़ों देशवासी रख रहे स्वर्णिम भारत की नींव
- जब संकल्प के साथ साधना जुड़ जाती है, तो एक नये कालखंड का जन्म होता है

“ सात देशव्यापी अभियानों को पीएम ने दिखायी हरी झंडी, पूरी दुनिया भर से जुड़े लाखों लोग

“ राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र, सीएम अशोक गहलोत, गुजरात के सीएम भूपेन्द्र पटेल, केन्द्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी ने किया ऑनलाइन सम्बोधित

“ ग्रेमी अवॉर्ड से सम्मानित एक्टर रिकी केज की ओर से अमृत महोत्सव थीम पर बनाया गया वीडियो एलबम किया गया रिलीज



वर्चुअल उद्घाटन कार्यक्रम में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, लोकसभा स्पीकर ओम बिरला, संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री जे. किशन रेड्डी, न्यूयॉर्क से ब्रह्माकुमारीज की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, ब्रह्माकुमारीज के कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय भाई तथा देश-विदेश की कई गणमान्य हस्तियां।

शुभारंभ किया। इस दौरान अपने सम्बोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान के प्रयासों से देश को एक नई ऊर्जा और शक्ति मिलेगी। त्याग और कर्तव्य भाव से करोड़ों देशवासी आज स्वर्णिम भारत की नींव रख रहे हैं। सबका साथ, सबका

विकास और सबका प्रयास देश का मूलमंत्र बन रहा है। हम ऐसी व्यवस्था बना रहे हैं जिसमें भेदभाव की जगह ना हो। ब्रह्माकुमारीज का प्रभाव पूरे विश्व में है। मुझे उम्मीद है कि आने वाले समय में इस अभियान में नयी ऊर्जा का संचार होगा।

इन्होंने भी किया सम्बोधित :-

तनाव दूर करने का सहज साधन 'ओम शांति का महामंत्र' : सीएम गहलोत

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि मैं बचपन से ही यहाँ आता रहा हूँ। यहाँ दादियों ने मुझे मूलमंत्र दिया है कि जब भी तनाव हो तो तीन बार ओम शांति बोलना। ओम शांति एक ऐसा मंत्र है जिसके उच्चारण से ही तनाव दूर हो जाता है। उन्होंने दादियों के साथ के अनुभव को साझा करते हुए व ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए अमृत महोत्सव के

तहत होने वाले कार्यक्रमों को जनमानस के लिए महत्वपूर्ण बताया और कहा कि संस्था आने वाली पीढ़ी को अच्छे संस्कार देने का कार्य कर रही है।

आज़ादी के अमृत महोत्सव से जन-जन को मिलेगा लाभ : भूपेन्द्र पटेल

गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज अच्छा काम कर रही है। आज़ादी के अमृत महोत्सव से जन-जन को लाभ मिलेगा। इस अभियान से समाज में अच्छा संदेश जाएगा, इसलिए ब्रह्माकुमारीज को बधाई देता हूँ।

आधुनिक भारत की छवि दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा यह संस्थान : ओम बिरला

लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था पिछले आठ दशकों से व्यक्तित्व निर्माण का कार्य कर रही है। आपने राजयोग से समस्त मानवता को साधना और अध्यात्म का मार्ग बताया है। यह अभियान स्वर्णिम भारत की झलक और आधुनिक भारत की छवि दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यहाँ की आध्यात्मिक जीवनशैली समाज को नई दिशा दिखा रही है।

अमृत महोत्सव से दुनिया को मिलेगा नया रास्ता : पर्यटन मंत्री

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री जे. किशन रेड्डी ने कहा कि अमृत महोत्सव के तहत ब्रह्माकुमारीज के आयोजनों से दुनिया को नया रास्ता मिलेगा। इसके तहत संस्थान का 15 हजार कार्यक्रमों के जरिए 10 करोड़ लोगों तक पहुँचने का लक्ष्य है।

शांतिवन-आबू रोड। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रह्माकुमारी संस्थान के आबू रोड स्थित शांतिवन परिसर में 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान' का विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा शुभारंभ किया। इसके साथ ही उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा साल भर चलने वाले सात अभियानों का भी रिमोट द्वारा

हमारे संकल्पों से एक नये कालखंड का जन्म होने वाला है : मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इस अभियान में स्वर्णिम भारत के लिए भावना भी है, साधना भी है। इसमें देश के लिए प्रेरणा भी है और ब्रह्माकुमारियों के प्रयास भी हैं। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारी परिवार का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। जब संकल्प के साथ साधना जुड़ जाती है, जब मानवमात्र के साथ हमारा ममभाव जुड़ जाता है, अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों के लिए इंदं न मम्, यह भाव जागने लगता है, तो समझिए कि हमारे संकल्पों के ज़रिये एक नये कालखंड का जन्म होने वाला है। एक नया सवेरा होने वाला है। सेवा और त्याग का यही अनुभव आज अमृत महोत्सव में नये भारत के लिए उमड़ रहा है।



शांतिवन के विशाल डायमण्ड जुबली हॉल में अभियान के उद्घाटन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी।

मेडिटेशन की भी लगायें वैक्सीन

बाहर के संसार को पाने के लिए एक लगन पैदा करनी पड़ती है और भीतर संसार बनाने वाले को पाने के लिए एक बेचैनी। भीतर से परमात्मा को पाने की बेचैनी जितनी अधिक होगी, बाहर की दुनिया में उतने ही चैन से रह सकेंगे। यह बात खास तौर पर इस समय देश की बारह से अठारह वर्ष की उम्र वाली पीढ़ी को समझानी होगी। महामारी के दौर में अब इनका वैक्सीनेशन हो रहा है। यह वैक्सीन इनके तन को सुरक्षा देगी पर ठीक इसी समय इनके मन को भी विश्राम मिलना चाहिए। मन के वैक्सीन का नाम है 'मेडिटेशन'। ध्यान रखने से भीतर जो शून्य जगता है, उसके बाद बाहर का शोर हमारी भौतिक सफलताओं के लिए सहारा बन जाता है। यहाँ भीतर का शून्य यानी कि एक प्रफुल्लित, प्रभाव रहित और उमंग-उत्साह से भरपूर स्थिति का होना है। यह पीढ़ी जिस तेजी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहती है, उसमें इनके तन को तो खूब सक्रिय रखना है, पर मन को विश्राम देना ही पड़ेगा। यदि यह काम समय पर नहीं किया तो हमें इसके दुष्परिणाम भुगतने होंगे। जब मल्लाह ही लूटने पर आ जाये तो कश्ती और पतवार दोनों हथियार हो जाते हैं। मन की सक्रियता के चलते यह पीढ़ी कहीं खुद को खुद ही न लूट ले। स्वयं से स्वयं को बरबाद न कर ले। इसलिए समय रहते इनके लिए मन का वैक्सीनेशन भी तैयार रखा जाए। ध्यान कोई धार्मिक क्रिया नहीं है, एक जीवनशैली होनी चाहिए। नई पीढ़ी के बच्चों को यह बात समझाने का यही सही समय है।



डॉ. कृ. गंगाधर

आज मेडिटेशन का दावा तो कई लोग कर रहे हैं पर मेडिटेशन है क्या और उससे कैसे लाभ पहुंचता है, ये सवाल अभी भी मन को झंकझोरता है। इटालियन में मेडिटेशन शब्द 'मेदुरी' से निकला हुआ है। मेदुरी यानी 'यू हील योरसेल्फ'। मेडिटेशन, हमारा जो पर्पज है, उसको प्रोग्रेसिव (विकासशील) बनाने में सम्पूर्ण रूप से मदद करता है। यह सब पाने के लिए हमें मेडिटेशन की सही विधि या सही तरीका समझना बहुत जरूरी है। आज हम युवाओं के संदर्भ में बात करें तो युवा अपने शारीरिक तौर पर बहुत ही सशक्त और ऊर्जावान होता है, उनका ब्रेन बहुत ही सक्रिय होता है। उनके ब्रेन को यदि सही दिशा व सम्पूर्ण रूप से उपयोग में लाया जाए तो वो कमाल का काम करेगा।

ऐसे युवाओं को मेडिटेशन को अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए। चौबीस घंटे में से कम से कम एक घंटा उसे मेडिटेशन के लिए निकालकर सही तरीके से करना चाहिए। हो सके तो सुबह का समय इसके लिए ज़्यादा उपयुक्त है। मेडिटेशन हमें अपने आप से जोड़ता है। स्वयं को स्वयं के साथ जोड़ता है और बाह्य वातावरण से बचाए रखता है। मेडिटेशन मन को हेल्दी बनाता है, यानी कि अनावश्यक, व्यर्थ व विकल्पों की जाल से मुक्त रखता है। परिणामस्वरूप मन ज़्यादा सक्रिय व तरोताजा रहता है। ऐसे मन से जिस उद्देश्य की तरफ वे जाना चाहते हैं, उस दिशा में उसे बहुत ही मदद मिलती है। समय की भी बचत होती है और अपने लक्ष्य को वो अच्छी तरह से समझ भी लेता और उसे पाने के लिए वो प्रेरित होता है। तरोताजा मन से की गई हर सजगशीलता फलदायी होती है। जहाँ माइंड और ब्रेन सशक्त है वहाँ उत्पादकता बढ़ जाती है। यहाँ माइंड माना हमारी सृजनात्मक शक्ति। और ब्रेन यानी कि शारीरिक शक्ति। हम ये भी कह सकते हैं कि माइंड एक सॉफ्टवेयर की तरह है और ब्रेन हार्डवेयर की तरह। जब दोनों ही सम्पूर्ण रूप से अपने रोल अदा करने में सशक्त हैं, तब उससे होने वाली प्रतियोगिता भी उच्च श्रेणी की होगी। मेडिटेशन रूपी मन की वैक्सीन के लिए आपको प्रतिदिन लगाना जरूरी है। जैसे कम्प्यूटर में भी हम टेम्प फाइल को डिलीट करते हैं जिससे कम्प्यूटर की सक्रियता बनी रहती है, उसी तरह हमें भी मन में उठने वाले लक्ष्यविहीन या पर्पज विहीन, अनावश्यक व व्यर्थ संकल्प व विचार रूपी टेम्परी जो फाइल्स हैं उन्हें भी डिलीट करना होगा। अगर उसे डिलीट नहीं किया गया तो हँग होने की भी संभावना बनी रहेगी। अगर ऐसा हुआ तो आपके हाथ असफलता ही लगेगी। तो आप समझ ही गये होंगे कि ये मेडिटेशन वैक्सीन कितना हमें सुरक्षित भी रखेगी और सक्रिय भी। युवाओं, ये वैक्सीन के साथ-साथ इस वैक्सीन को भी जरूर लगाइये और इसे भी स्थान दीजिए, जिससे आपका करियर कमाल का होगा। इससे आपने जो भी सपने संजोये हैं, उसमें आप कामयाब होंगे।

बाबा को हक से मेरा समझना माना खुशी का दरवाजा खुलना



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम सभी कौन-सी आत्मायें हैं? खुशनसीब। हमारा नसीब कितना खुश है, जो बाबा हमें निमंत्रण देके सुनाने के लिए बुलाते हैं आओ सुनो। भगवान किसको बुलावे तो आके सुनो इससे बड़ा भाग्य और क्या होगा! तो जैसे बाबा निमंत्रण हमको देता है कितने प्यार से, एक-एक बच्चे को कितना दिल से प्यार करता है। थोड़ा दिन भी कोई नहीं आयेगा तो कहेगा क्यों नहीं आता? आपको भी फील होता है ना! अगर कोई भी दिन मिस करो तो सारा दिन वो चलता तो है, याद तो आती है ना! जैसे कोई चीज़ बहुत जरूरी है मानो और वो मिस हुई है, ऐसे हमारी जीवन बाबा ने बना दी है।

बाबा कहता नहीं है क्यों नहीं आते हो, क्या है? वह हिसाब लेना होगा तो कोई दिन अचानक लेगा, लेकिन रोज याद रखता है कि आज क्लास छोटा था, आज कम थे, तो जो कम होंगे उसको कितना बाबा ने याद किया। ऐसे मिस होना नहीं है क्योंकि भगवान आवे हमको सुनाने कुछ और मैं कोई भी काम से या सुस्ती से नहीं आऊं, तो कौन-सी बात अच्छी लगती है? भगवान आया है अपने परमधाम से और हम क्या-क्या कर रहे हैं? तो भगवान का प्यार देखो कितना है! वो तैयार होके आता है टाइम पर और कितने प्यार से एक-एक से मिलता है।

बाबा की दृष्टि सबकुछ है। दृष्टि से हमारी सृष्टि बदल गई। बाबा कहे कुमारियां, कुमारियों को बाबा कितना याद करता है, यह बच जावें। हमारे से ज़्यादा बाबा को ओना रहता है कि मेरा बच्चा माया से बचा रहे, कहाँ नीचे-ऊपर न हो। पहले बाबा याद करता है, तो खुशी होती है यानी भगवान हमको याद करता है, हम तो याद करते ही हैं लेकिन भगवान किसको याद करता? हम एक-एक को याद करता ना! मेरे बच्चे, मेरे मिठे बच्चे, मेरे लाडले बच्चे, क्या नहीं

टाइटल देता, वह नशा रहे ना सारा दिन तो वो दिन कैसा बीतेगा, स्वर्ग तो उसके आगे कुछ नहीं। स्वर्ग के सुख क्या भी हों लेकिन संगम का सुख जो है परमात्मा से मिलने का, वो कोई युग में नहीं। और हम संगम निवासी हैं, खास मधुवन को भाग्य मिला हुआ है, मिलने का स्थान यही वो स्थान है।

एक वर्ष या एक भी मास नहीं आओ मानो तो आपको चैन आता है? घर में याद रहेगा, आज गये नहीं, आज गये नहीं क्योंकि बाबा का प्यार इतना मिलता है, प्यार माना कोई ऐसे भाकी पहनें, इसको नहीं कहा जाता है। प्यार है दिल का, जो बैठे हुए भी कर सकते हो, बाहर अलग होते हुए भी दिल में समा सकते हो। तो बाबा का दिल हमारा दिल है। हम कहाँ रहते हैं? बाबा के दिल में। और कहाँ रहेंगे, सबसे अच्छा स्थान तो बाबा का दिल है और वहाँ ही हम रहते हैं। हरेक यही कहता है ना मेरा बाबा, थोड़ा भी ऐसे-ऐसे कहो ना, तो वो कैच करते हैं जल्दी। जो भी आता है पहले तो यह अनुभव करता है, मेरा बाबा है तभी तो चल रहे हैं। नहीं तो चले ही नहीं। तो सभी बाबा को देख के खुश होते हैं और बाबा मेरे को देखके खुश होते हैं, हरेक समझते हैं ना ऐसा! बाबा को मेरे बिना चैन नहीं और हमको बाबा के बिना चैन नहीं।

तो सभी खुश हैं, बस खुशी नहीं गँवाना। खुशी गँवाना माना कुछ दाल में काला है। और क्या है! खुश रहें, हल्के-फुल्के ऐसे जैसे हवा में सितारे देखो कितने चमकते हुए दिखाई देते हैं। हमेशा खुश रहना चाहिए, खुशी नहीं जानी चाहिए क्योंकि संगमयुग ही है जिसमें ज़्यादा में ज़्यादा खुशी रह सकती है। संगमयुग की विशेषता क्या है? खुश रहना। दुःख सब जो है वो बाबा को दे देते हैं बाबा इसको आप सम्भालो। हमने बहुत सम्भाला अभी तो आप सम्भालो। और इतना प्यार से कहते बाबा को, तो बाबा को सम्भालना ही पड़ता है। बाबा को हक से मेरा समझने से खुशी का दरवाजा खुला है। भगवान मेरा हो गया, बाकी क्या चाहिए।

वफादार हैं तो बाबा जिम्मेदार है...



राजयोगिनी दादी जानकी जी

जो आज्ञाकारी बच्चा होता है, उसको जो आज्ञा मिले उस पर चलना अच्छा लगता है क्योंकि वो जानता है कल्याणकारी शिवबाबा है। ऐसे दिल से समझके करने में मार्क्स मिल जाती हैं। तो आज्ञाकारी बनने में जो फुल मार्क्स ले लेवे तो पास विद ऑनर में आ सकते हैं। अनुभव यह कहता है जो बहुत बातों में आज्ञाकारी बनना नहीं जानते हैं, उन्हें मार्क्स बहुत कम मिलती हैं।

जब स्टूडेंट लाइफ है तो पास विद ऑनर में आना है। पहले हर बात में आज्ञाकारी बनना है। फिर वफादारी, किसी भी देहधारी के साथ न लगाव, न झुकाव। वफादारी में सतीव्रत। आज्ञाकारी में पिताव्रत पक्का। आज्ञाकारी है तो निश्चय में बल है इसलिए निश्चित हैं। याद में परिपक्व ऐसे बनें जो दूसरी कहीं नजर न जाये। न व्यक्ति, न वैभव तब इतनी प्राप्ति है। जरा-सी भी इसमें आँख गई तो शक्ति नहीं आयेगी। तो यह रॉयल्टी भी नहीं है क्योंकि हम किसके बच्चे हैं और कहाँ आँख चली जाये...। लोभ या मोह वश गुस्सा जरूर होगा तो वफादार बन नहीं सकता। वफादार को यह अच्छी तरह से पता होता है कि जो बाबा से मिलता है, वो कहीं से नहीं मिलता। वफादार, निर्भय, निर्वैर है। वफादार हैं तो बाबा जिम्मेदार है। ऐसी की बाबा अपने आप सम्भाल करता है, उनको यह फिक्र नहीं होता कि मेरे को कौन सम्भालेगा! अगर यह ख्याल भी आता है तो उसने न अपने को आत्मा समझा है, न परमात्मा का बच्चा हूँ यह महसूस किया है।

जो ऑनरेस्ट है उसे कभी हेरा-फेरी करने का ख्याल भी नहीं आ सकता है। ऑनरेस्ट सदा फेथफुल और ओबेडिएंट होता है। अन्दर एक बाहर दूसरा हो नहीं सकता। वह अच्छी भावना वाला, मीठा है। तो अपना पक्का प्रिंसीपल बनाके रखो जो आत्मा इतनी स्वच्छ, साफ-सुथरी हो जाये। तो अपने-अपने पार्ट अनुसार अपने स्थिति की स्मृति ऐसी रहे, जो सहज समय पास होता रहे और हम आगे जा रहे हैं, ऐसा लगने लगे। जैसे हरेक एंजेल का पार्ट अपना है, कोई कैसे बैठा, कोई कैसे...पर है तो एंजेल ना। एंजेल के हाथ-पाँव चलते हुए नहीं देखते, पर उनकी आँखें और पंख ही काम करते दिखाई देते। एंजेल के आँखों की भाषा बड़ी मीठी है। तो दिन-प्रतिदिन हमारे नयनों की भाषा भी ऐसी हो जो सबको मधुरता का, दिव्यता का अनुभव होने लगे। बाबा को देखो हज़ारों को कैसे खुश कर देता है। हम भी बाबा के बच्चे सदा खुश रहके सबको ऐसे खुश करते रहें। तो जैसे बाबा चाहता है वैसे बनना है। दिल में सदैव रहम, स्नेह, सच्चाई हो, तो दिल सदा ही खुश रहेगी। कभी किसी को दिल लेने की जरूरत नहीं पड़े, ऐसी हमारी दादी को देखो, कभी अपसेट नहीं हुई होंगी। जैसा मेरा बाबा सभी के दिलों को जानने वाला, ऐसा बनना है।

तपस्या के पहले अपना चार्ट चेक करो और परफेक्ट बनो



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

तपस्या का आधार ही है - न्यारे और प्यारे बनो, इससे स्थिति अडोल रहेगी। न्यारे-प्यारे रहेंगे तो कोई भी इच्छा आसक्ति नहीं पैदा होगी। जब कोई भी आसक्ति नहीं, मान-शान, बड़े-छोटे, अच्छे-बुरे कोई इच्छा नहीं तो आपकी स्थिति बहुत-बहुत स्वीट हो जायेगी। फिर ऐसी स्थिति से याद में बैठो तो स्थाई याद हो जायेगी। तपस्वीमूर्त बन जायेंगे।

तपस्वीमूर्त बनने के लिए इच्छा मात्रम अविद्या बनो। किसी भी प्रकार की अंश मात्र भी इच्छा न हो। किसी व्यक्ति से स्वार्थ न हो। वैभवों, वस्तुओं की चाहना भी न हो। ऐसी निःस्वार्थी जीवन बनाओ। इसके लिए बुद्धि में त्यागवृत्ति हो। जब हम हैं ही त्यागी, वैरागी तो तपस्वी तो बन ही

जायेंगे।

तपस्वीमूर्त बनने के लिए - सुनते भी न सुनो, देखते भी न देखो। इसके लिए चाहिए सहनशीलता, कईयों की दिल बड़ी कोमल होती है। ज्ञान में कोमल दिल नहीं चाहिए। कोमल दिल वाले को छोटी-छोटी बात में फीलिंग आती, जो उदासी ले

आती है। कोमल दिल वाला सदा कमजोर होगा, हिम्मतवान नहीं हो सकता। वह डरपोक होगा। कोमल दिल वाला ही जवाब देता कि क्या करूँ मेरे में सहनशक्ति नहीं है। संगठन में चलने के लिए सहनशीलता का गुण बहुत

जरूरी है। क्योंकि अनेक प्रकार की बातें सामने आती हैं। कभी कोई भाव-स्वभाव होगा, कभी कोई मुझे कुछ बोल देगा... इसलिए सहनशीलता और धैर्यता का गुण बहुत जरूरी है। धैर्यता के लिए सहनशीलता जरूर चाहिए। तो इन

दोनों गुणों को धारण कर तपस्वी बनो।

तपस्या अर्थात् अपना बुद्धियोग एक बाबा से रखो। एक बाबा को ही देखो, बाबा से ही सुनो, बाबा के संग बैठो...। बाबा से मीठी-मीठी बातें करो- एक बाबा के सिवाए और कुछ भी दिखाई न दे। उनके दिल में सर्व के प्रति स्नेह रहता, सब मीठे प्यारे लगते। वो किसी से भी नफरत नहीं करता। हर एक की विशेषता को ही देखता है।

रोज चेक करो कि मेरे में कौन-सी कमी है जो व्यर्थ संकल्प व विकल्प उठते हैं। दिनचर्या में चेक करो कि किस बात ने, किस कारण ने, किस रूप से मेरी बुद्धि में व्यर्थ संकल्प उत्पन्न किया जिससे बुद्धियोग टूटा। यदि बुद्धियोग टूटता नहीं तो निरन्तर आत्मा का दीपक जैसे जगा हुआ है। फिर खुद को और दूसरों को भी रोशन करते रहेंगे। खुद

में भी साइलेन्स की शक्ति भरी हुई होगी और दूसरों को भी वही वायब्रेशन मिलते रहेंगे।

अब अपनी ऐसी स्थिति रखो जो सदा मौज में और मजे में रहे। ऐसा कभी भी न हो जो कोई बात का चिंतन नींद ही फिटा दे। कईयों में व्यर्थ चिंतन करने की ऐसी आदत होती है जो अपना टाइम, एनर्जी वेस्ट करते रहते, नींद भी खराब कर देते हैं। छोटी-सी बात होगी और सोचेंगे बहुत लम्बा। बात कुछ भी नहीं होगी और चिंतन इतना बढ़ा करेंगे जो राई को पहाड़ बना लेंगे। लेकिन इन सभी का सूक्ष्म कारण है - स्वार्थ, इच्छा, चाहना। इसने मेरी इन्सल्ट क्यों की। बस इतनी-सी बात का विस्तार ऐसा कर देंगे जो पूरा 24 घंटे की एनर्जी वेस्ट कर देगा। फिर वह तपस्या क्या करेंगे!

तो तपस्या के पहले अपना चार्ट चेक करो और चेकिंग करके परफेक्ट बनो। साइलेन्स की शक्ति, तपस्या की शक्ति ऐसी बढ़ाओ जो सूक्ष्म में भी कोई इच्छा न रहे। अगर अब तक हो तो उसे समाप्त कर दो।



मन को जीतने की अन्य युक्तियां

मानव की एक शुभ इच्छा यह होती है कि जिस मार्ग, युक्ति अथवा साधना से उसे लाभ हुआ है, वह दूसरों को भी बताये ताकि वे भी लाभान्वित हों। मुझे कई स्थानों पर भी जाने का अवसर प्राप्त होता रहा है जहाँ जाप के लिए मंत्र अथवा 'नाम' देने की प्रथा है और जहाँ यह शिक्षा दी जाती है कि वह मंत्र किसी को बताया न जाये। रटुआ तोता बनना तो मुझे सदा अस्वीकार रहा ही है, पर 'किसी को न बताने' का आदेश तो खटकता ही रहा है। मुझे जिस संस्था से मनजीत बनने की युक्तियों का ज्ञान हुआ है, उनकी शिक्षा तो यह है कि ये युक्तियां सबको बताई जायें ताकि अधिक से अधिक मनुष्यात्मायें लाभान्वित हो सकें। अतएव, दूसरों के कल्याण के निमित्त बनने की स्वाभाविक इच्छा और उक्त आदेश को लेकर इस लेख की रचना हुई।

मनजीत बनना मासी जी के घर में जाने के समान सहज नहीं है। मनजीत बनने से सर्वोत्तम पद प्राप्त होता है- मनुष्य जगतजीत, जीवनमुक्त देवतापद पाता है। अतएव याद रहे कि मनजीत बनने की जिन युक्तियों का यहाँ उल्लेख किया गया है। वे स्वयं गीता के भगवान, त्रिलोकीनाथ परमात्मा ही से प्राप्त हुई हैं। उस परमपिता परमात्मा ही की कृपा-प्रसाद के रूप में इन युक्तियों द्वारा जो अतीन्द्रिय सुख प्राप्त हुआ है, जो स्थाई एवं वास्तविक शान्ति उपलब्ध हुई है और जो भविष्य का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, उसका अनुभव एवं साक्षात्कार मेरे हृदय के भीतर गुदगुदी करता, मेरे मस्तिष्क को बारम्बार प्रेरता है कि अन्य भाईयों तथा बहनों को भी ये युक्तियां बताऊँ ताकि मेरे समान नहीं, मुझ से भी अधिक उनको भी अपार खुशी हो, वे भी कृत्य-कृत्य हो जायें।

मेरी यही धारणा है कि इन युक्तियों के बिना मन सम्पूर्ण रीति से जीता ही नहीं जा सकता। साथ में मेरा यह न्योता है कि यह युक्तियां स्वयं ज्ञानस्वरूप, सर्वशक्तिवान, अव्यक्तमूर्त परमात्मा के बिना अन्य कोई अपने पुरुषार्थ, गवेषणा इत्यादि के बलबूते पर सोच ही नहीं सकता, खोज ही नहीं पा सकता।

मेरे अनुभव में आई कुछ युक्तियां

1. स्वरूप का परिचय

जब किसी मनुष्य को यह मालूम हो जाता है कि वह वास्तव में अमुक पिता की सन्तान है, अमुक देश का निवासी है, अमुक धर्म वाला है और वर्तमान समय वह अपने को जिस पिता की सन्तान समझता है, जिस देश का निवासी मानता है, जिस धर्म से अपना सम्बन्ध जोड़ता है, वह उसकी भूल है तो मनुष्य अपने जीवन के वर्तमान तरीके को त्याग कर, कुमार्ग को छोड़कर अपने वास्तविक स्वरूप में आने लगता है।

मनोवैज्ञानिक सिद्धांत है कि मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही स्वभाव, गुण, कर्म वाला बनता है। पर जब मनुष्य अपने असली स्वरूप, अपने कुल, अपने देश को जान जाता है, वो स्मृतियां जाग्रत हो जाती हैं। उनकी सोच, बोल, चाल-चलन वैसा ही होने लगता है। तब वो अपनी वास्तविक स्मृतियां आने से व्यर्थ की सोच से छूट जाता है। तो ऐसी कौन सी स्मृतियां हों जो हम बाह्य वातावरण के प्रभाव से मुक्त रह सकें...

मनुष्य का कोई बच्चा, भेड़ियों द्वारा उठाया जाने पर और उनकी संगत में रहने पर उनके समान बन ही जाता है क्योंकि उसे अपने स्वरूप, स्वधर्म, स्वदेश, स्वमान इत्यादि का परिचय ही नहीं होता। परन्तु जब उसे यह निश्चयात्मक ज्ञान करा दिया जाये कि वह भेड़िया नहीं वरन मनुष्य है और उसके कर्तव्य भेड़ियों जैसे नहीं बल्कि मनुष्यों के कर्तव्यों जैसे होने चाहिए तो उसकी बोल-चाल, खाने-पीने में रात-दिन का अन्तर पड़ जाता है। इसी प्रकार जब मनुष्यात्मा निश्चयात्मक रीति से जान जाती है कि वह देह नहीं, आत्मा है; देह के पिता की सन्तान नहीं वरन आत्मा के अविनाशी पिता परमात्मा की सन्तान है; परमात्मा की सन्तान होने के नाते उसका स्वधर्म तो पवित्रता और शान्ति है; उसकी आदिम अवस्था तो कर्मातीत है और उसका निजी अविनाशी देश परलोक है तो उसका मन कोई ऐसा संकल्प नहीं करता जो अपवित्र हो, अशान्ति उत्पन्न करने वाला हो, कर्मबन्धन में लाने वाला हो, ईश्वरीय लक्षणों

के विपरित हो। अर्थात् उस मनुष्य का मन अच्छे मार्ग पर लग जाता है और वशीभूत हो जाता है, वह अपने स्वरूप की तथा पिता परमात्मा की याद में लग जाता है। तब उसकी खुशी अथाह हो जाती है क्योंकि वह असत्य निश्चय को छोड़कर सत्य निश्चय में स्थित होता है। जब उसकी बुद्धि में सत्य का निश्चयात्मक ज्ञान-बल आ जाता है तो वह मन को असत्य से मोड़ती है। पहले जो असत्य निश्चय होने के कारण उसका मन प्रकृति के विषय और विकारों में भागता था

भूलने अथवा उल्लंघन करने पर ही मनुष्य अकर्तव्य कर बैठता है, अशुभ सोच बैठता है। अतएव यदि किसी मनुष्य को उसकी उच्च परम्पराओं की एवं कुल की मर्यादा की, धर्म-वंश की पहचान कराई जाये तो उसका मन सन्मार्ग पर आ जाता है।

स्वामी दयानन्द जब राजा के पास गये तो वह वेश्याओं के नृत्य-विलास में ही विलीन था। वह अपनी दिनचर्या को अपनी कुल की मर्यादा के विपरीत व्यतीत करता था। स्वामी जी ने उसे वेश्याओं के साथ विलासता में फँसा देखकर कहा - "शेर का कुतिया के साथ निवास?" बस, इन शब्दों को सुनकर राजा के खून की बूंद-बूंद में ज्वाला जाग उठी। एक ही ठोकर से वह चेत गया क्योंकि अपनी जिस वंश-मर्यादा को वह भूलने के कारण अकर्तव्यों में लग गया था, उसकी स्मृति उसे दिला दी गई।

परन्तु सर्वोत्तम कुल है देवताओं का कुल। हम भारतवासी वास्तव में देवतावंशी हैं, हम श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण, श्रीसीता-श्रीराम इत्यादि देवी-देवताओं की सन्तान हैं। नहीं, नहीं हमारा अपना आदि सनातन धर्म देवी-देवता धर्म था। परन्तु जन्म-मरण में आते-आते, समय के प्रभाव से हम अपने वास्तविक धर्म-कर्म, असल-नसल को भूल गये थे। अब पुनः इस स्मृति में स्थित हो जाने से कि - "मैं तो देवता धर्म का हूँ। मैं तो वास्तव में देवता था। मेरा वंश तो वह सर्वोत्तम वंश था कि जिसके प्रमुख राज्य-राजेश्वरों का पूजन आज तक भी भारत के करोड़ों मन्दिरों में होता है। देवता तो सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा-प्रधान थे; मैं तो अपने वर्तमान दूषित कर्मों से कुल मर्यादा के विपरीत कर्म कर अपने कुल को कलंकित करने वाला बन गया हूँ; पूज्य से पुजारी और विकारी बन गया हूँ..." ऐसा सोचने पर मनुष्य को उत्साह, बल एवं लक्ष्य मिलता है और वह पुनः दिव्य सोचता है, दिव्य कर्तव्य करता है अर्थात् देवता हो जाता है। देवता बनने का अर्थ ही है मनजीत बनना। अतएव मनुष्यात्मा को, भारतवासियों को, यह ज्ञान प्राप्त करना चाहिए कि उनका आहार, विहार, व्यवहार, विचार, आचार देवताओं समान होने चाहिए।

अब वहाँ से हटकर अपने आदि स्वरूप में स्थित हो जाता है क्योंकि उस जैसी मस्ती और उस जैसा स्थाई सुख और किसी तरीके से नहीं हो सकता। मनुष्य का स्वधर्म तो है ही शान्ति और पवित्रता। अतएव इसकी पहचान रहने पर उससे कोई अपवित्र और अशान्तिकारी कर्म हो ही नहीं सकता।

2. अपने कुल की पहचान

आप देखते हैं कि मनुष्य जो कार्य करता है जिस प्रकार से रहता-सहता है, वह प्रायः अपने कुल की मर्यादा के अनुसार होता है। अपनी-अपनी जाति अथवा नसल के अनुसार ही मनुष्य कर्म करने का प्रयत्न करते हैं। उदाहरण के रूप में एक उच्च कुल का व्यक्ति एक अशिक्षित एवं नीच जाति के व्यक्ति से विवाह नहीं करना चाहता। 'रघुकुल रीति यही चली आई' के अनुसार सब का प्रयत्न यही रहता है कि वह कोई ऐसा अनिच्छित कर्म न करे जिससे उनका वंश कलंकित हो। अपने कुल की मर्यादा को



ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

3. प्रभु-चिन्तन

यह एक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत है कि मनुष्य जैसे सोचता है वैसे ही गुण, कर्म, स्वभाव वाला बनता है। इस सिद्धांत के अनुसार यदि मनुष्य श्वास-श्वास परमात्मा के गुणों, उसके दिव्य कर्मों तथा उसकी सम्पत्ति की याद में रहे तो वह भी दिव्य मन औद दिव्य बुद्धि वाला अर्थात् देवता बन जाता है।

एक राजपुत्र को यह निश्चय और याद होने के कारण कि वह राजकुमार है, स्वभावतया खुशी, साहस, धन-खुमारी रहती ही है। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्यात्मा निश्चयपूर्वक मनन करती है - "मैं तो सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ, मैं तो त्रिलोकीनाथ परमात्मा का बच्चा हूँ, सारे ब्रह्माण्ड के स्वामी का बालक हूँ - तो उसकी मस्ती, आनन्द, अतीन्द्रिय सुख और शक्ति के अनुभव का पारावार नहीं रहता और उसकी दिनचर्या में परिवर्तन आ जाता है क्योंकि जो अपने को परम पवित्र परमात्मा की सन्तान निश्चय करता है, वह अपवित्र क्योंकर होगा, जो अपने को शान्तिस्वरूप पिता की सन्तान मानता है वह क्यों अशान्त होगा?

4. परमधाम की स्मृति

जब किसी को यह मालूम हो जाये कि - "अब मैं जिस देश में हूँ यह एक नाटक मंच है, कर्मक्षेत्र है। यहाँ तो खेल-खेल कर मुझे वापिस अपने धाम में लौटना है तो उसे इस व्यक्त जगत के विषयों में आसक्ति कैसे होगी? यहाँ के व्यक्तियों में मोह क्यों होगा? वह तो इस सृष्टि से न्यारा, इसका साक्षी होकर अपना खेल पूरा करेगा। इस प्रकार उसकी वृत्तियाँ उपराम हो जायेंगी, उसका मन वश हो जायेगा।



आगरा-नवपुरा(उ.प्र.)। राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में किसान भाइयों को सम्मानित करने के पश्चात् उपस्थित हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु बहन।



छोटा उदेपुर-कवांट(गुज.)। राष्ट्रीय किसान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'किसान सम्मेलन' में नव निर्वाचित सरपंच श्रीमति शीला बेन महेश भाई राठवा तथा ग्राम पंचायत के चुने हुए अन्य सदस्यों का स्वागत एवं सम्मान किया गया। इस अवसर पर ब्र.कु. डॉ. मोनिका बहन, संचालिका, छोटा उदेपुर सेवाकेन्द्र तथा ब्र.कु. हेमा बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका उपस्थित रहे।



दिल्ली-मजलिस पार्क। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका एवं दिल्ली ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारी की संयोजिका ब्र.कु. राजकुमारी दीदी, किसान मोर्चा के जनरल सेक्रेटरी संजय राघव, राष्ट्रीय प्रवक्ता अरविंद कुमार, जिला अध्यक्ष अनुराग शुक्ला समेत आठ पदाधिकारी, दिल्ली ग्राम विकास प्रभाग के संयोजक जयप्रकाश भाई तथा बड़ी संख्या में किसान एवं अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



बैरिया-उ.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में किसान भाइयों को सम्मानित करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. समता बहन तथा ब्र.कु. अजय भाई।



आस्का-ओडिशा। राष्ट्रीय किसान दिवस पर गंजम जिले में यौगिक खेती पद्धति के अनुसार फूलों की खेती करने वाले सर्वश्रेष्ठ किसान ब्र.कु. लक्ष्मी नारायण भाई को सम्मानित करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रवाती बहन। साथ हैं ब्लॉक एग्रीकल्चर ऑफिसर बसंत कुमार देव तथा ब्र.कु. सत्यप्रिय भाई।



बिहार शरीफ-नालंदा(बिहार)। किसान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शॉल एवं गुलदस्ता भेंट कर किसान भाइयों को सम्मानित करते हुए ब्र.कु. अनुपमा बहन तथा ब्र.कु. पूनम बहन।

ख्यालों को यं खूबसूरत करें...

गतांक से आगे...

हम बात कर रहे थे कि सकारात्मक विचार मिलेंगे कहाँ से? उसका स्रोत क्या है? उस स्रोत को खोजने की आवश्यकता है। जिस तरह से नकारात्मक सोच का आधार नकारात्मक सूचनाएँ हैं, नकारात्मक बातें हैं उसी तरह सकारात्मक सोच का आधार आध्यात्मिक चिंतन है। सकारात्मक माहौल है। श्रेष्ठ संग है, अच्छी किताबें हैं। जब उसको पढ़ते हैं तो हम उस दिशा में आगे बढ़ते हैं। अन्यथा आप देखो तो मनुष्य के मन के पास अथाह शक्ति और क्षमता है। आज दुनिया के अन्दर मनुष्य ने जितना भी विकास किया, जितनी भी खोजें की, वो तभी कर पाया जब उसने अपने मन को उस दिशा में, उस विषय पर एकाग्र किया। और उससे कनेक्टेड सारी बातें हासिल की तब उसका चिंतन धीरे-धीरे उसे ऊँचाई तक ले गया।

आज विज्ञान इतना विकसित हो गया है। इसी तरह आज मन के पास जो शक्ति और क्षमता है उस शक्ति और क्षमता को कहीं हम नकारात्मक और व्यर्थ बातों में तो नहीं गंवा रहे! तभी भगवान ने गीता में कहा कि हे अर्जुन! आत्मा स्वयं का मित्र है, स्वयं का शत्रु है। वो मन का मित्र कब बनता है जब मन सहित कर्मेन्द्रियाँ जीती हुई हैं। और जब मन सहित इन्द्रियाँ विचलित हैं, चंचल हैं तब वो स्वयं का शत्रु बन जाता है। तो इसीलिए मन के हारे-हार हैं और मन के जीते जीत। ऐसा कहा जाता है। मन से हारे-हार कैसे हैं, मन से जीते जीत कैसे हैं? कोई भी युद्ध पहले यहाँ से आरम्भ होता है। अगर यहाँ हमने हार स्वीकार कर ली तो जीवन के अन्दर हार ही मिलेगी। अगर ख्यालातों में हमने कामयाबी स्वीकार कर ली, जीत स्वीकार कर ली तो जरूर हर हारी बाजी को भी हम जीत लेते हैं। तो इसीलिए वर्तमान समय को देखते हुए हमें अपने मन से हमेशा ऐसे विचारों को जन्म देना है जिससे हर बाजी को हम जीत सकते हैं। और आध्यात्मिक चिंतन, आध्यात्मिक बातें, आध्यात्मिक ज्ञान, आध्यात्मिक प्रज्ञा हमारे उन चक्षु को खोल देते हैं जिससे हमें उस सुनहरी दुनिया का साक्षात्कार होने लगता है। कहा जाता है कि एक बार एक छोटा-सा राज्य था और उस छोटे से राज्य के अन्दर बड़ा सुकून था।

लेकिन एक बड़े से राज्य वाले राजा ने सोचा कि इस छोटे से राज्य को भी मैं अपने वश में कर लेता हूँ। तो अचानक उसने आक्रमण कर दिया। और वहाँ का राजा परेशान हो गया कि हमारी सेना तो बहुत छोटी-सी है। ये तो बहुत बड़ा राजा है, बहुत बड़ा राज्य है, बहुत बड़ी सेना है। उसने अपने सेनापति को बुलाकर कहा कि अब क्या करें हम? तो सेनापति ने तो पहले ही कह दिया कि उनकी सेना इतनी विशाल है, हमारी सेना से दुगुनी है तो हम इनके ऊपर जीत प्राप्त नहीं कर सकते। बेहतर है कि हम उनकी शरण में चले जायें। राजा को मंजूर तो नहीं था



ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

सचमुच एक विचार से व्यक्ति की सारी ज़िंदगी बदल जाती है।

लेकिन अब सेनापति ने हार स्वीकार कर ली तो क्या किया जाये।

राजा अपने गुरु के पास गया और गुरु से हाथ जोड़कर निवेदन किया कि ऐसी घड़ी में, ऐसे हालात में हम क्या करें? तो गुरु ने कहा कि सेनापति क्या कह रहे हैं? उन्होंने कहा कि हम बड़े राजा की शरण स्वीकार कर लें। तो गुरु ने कुछ घड़ी सोचकर कहा आपकी सेना का सेनापति हटाओ और मैं आपकी सेना का नेतृत्व करूँगा। राजा ने कहा कि आप करेंगे! तो गुरु ने कहा कि हाँ, मैं करूँगा। राजा ने सोचा कि गुरु जी ने कभी घोड़ा भी नहीं चलाया लेकिन अभी गुरु जी कह रहे हैं तो उनकी आज्ञा को तो मानना पड़ेगा। और इसीलिए राजा ने उस सेनापति से कहा कि तुम पीछे हट जाओ, गुरु जी अब इस सेना का नेतृत्व करेंगे। गुरु जी जैसे ही आगे बढ़े सेना के साथ तो बीच में

एक ऐसी पहाड़ी आई जिस पर एक मंदिर था। गुरु जी वहाँ रुके और सेना से कहा कि मैं ईश्वर के दर्शन करके आता हूँ। उनका आशीर्वाद लेकर आता हूँ कि हम सभी युद्ध में जा रहे हैं। आप थोड़ी देर रुको यहाँ पर। वो पहाड़ी चढ़कर ऊपर मंदिर में गये और कुछ समय के बाद नीचे आ गये। सेना वालों ने पूछा कि गुरु जी भगवान ने कुछ कहा? तो बोले हाँ कहा। गुरु जी ने बताया कि हमें इंतजार करना होगा। तो बोले किस बात का? भगवान ने कहा कि जब सूरज ढल जाये और यहाँ से प्रकाश निकला तो समझ लेना कि आपकी जीत है। अगर मंदिर में अंधेरा ही रहा तो समझ लेना कि हार है।

तो सब इंतजार करने लगे कि अब भगवान जवाब देने वाले हैं कि हमारी जीत है या हार है। उसी के आधार से हम आगे बढ़ेंगे। जैसे ही अंधेरा हुआ तो मंदिर से प्रकाश निकलने लगा तो सारी सेना में इतना उमंग भर गया, इतनी खुशी भर गयी कि अरे भगवान ने कह दिया कि अब हम ये युद्ध जीतने वाले हैं। एक ऐसा जोश उनके अन्दर आ गया। और उन्होंने उस सेना के ऊपर ऐसा आक्रमण किया जिससे उस सेना पर विजयी हो गये। जब विजयी होकर वापिस लौट रहे थे तो सैनिकों ने गुरु जी से कहा कि गुरु जी ईश्वर का धन्यवाद तो करके आये। तो गुरु जी ने कहा कि अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने पूछा क्यों? गुरु जी बोले क्योंकि वो दीया मैं ही जलाकर आया था। क्योंकि मुझे पता था कि आप सभी सामने वाले की सेना को देखकर इतने भयभीत हो गये और इसीलिए यहाँ हार स्वीकार हो गयी तो जीत प्राप्त करना बहुत मुश्किल है। इसलिए यहाँ जीतना जरूरी था। इसीलिए वो दीया जब जलाया तो दिन में तो प्रकाश दिखना नहीं था, अंधेरा हुआ तो प्रकाश दिखने लगा। और आप सबने मन से ये स्वीकार कर लिया, जीतने का विचार जो मन में आ गया तो एक ऐसा जोश अन्दर में आया कि उनकी दुगुनी सेना होने के बावजूद भी हम जीत गये। तो मन से जीते-जीत हैं, मन से हारे-हार हैं। इसीलिए ख्यालातों को खूबसूरत बनाओ तो ज़िंदगी खूबसूरत हो जायेगी। लेकिन अगर ख्यालातों में ही नकारात्मकता होगी तो ज़िंदगी भी अवसाद में पहुँच जायेगी। चुनाव हमारा अपना है।



बलौदा-छ.ग। ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित 'किसान सम्मान समारोह' में ब्र.कु. मंजू दीदी, बिलासपुर, जनपद सदस्य मंगतराम जांगड़े, कृषि विकास अधिकारी ए.डी. दीवान, ढोरला के मुख्य किसान रूद्र प्रताप सिंह, सरपंच बबीता साहू, राकेश गुप्ता, तखतपुर, शिक्षकगण तथा बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।



ब्रह्मपुर-पीयूआरसी(ओडिशा)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के लिए आयोजित स्नेह मिलन एवं सम्मान कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अशोक राय, चीफ मैनेजर, टाटा ग्रुप, राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, उपक्षेत्रीय संचालिका, ब्रह्माकुमारीज, राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी, निदेशिका, प्रभु उपहार स्ट्रीट सेंटर, ब्र.कु. ऋषिकेश साहू, कृषक तथा बड़ी संख्या में किसान एवं अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स नं - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क - M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bktivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेयबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO:- 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya
Vishwa Vidhyalya, Shantivan
Note:- After Transfer send detail on E-Mail - omshanti-
media.acct@bktivv.org or
Whatsapp, Telegram No:- 9414172087



देगलूर-महा। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मेनका बहन, ब्र.कु. विद्या बहन, किसान भारती प्रदेश अध्यक्ष तथा पूर्व विधायक शंकर अण्णा धोंडगे, पूर्व पंचायत समिति सभापति शिवाजीराव देशमुख, कृषि अधिकारी सोमेश्वर गिरी, नगर सेवक शैलेश उल्लेवार, पी.आई. सौहम माचरे, अनिल पाटील रामपुरकर, डॉ. सुनील, ब्र.कु. राम भाई, ब्र.कु. चंद्रकांत मोरे तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों सहित बड़ी संख्या में किसान भाई उपस्थित रहे।



अरेराज-बिहार। राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में किसान भाई-बहनों को सम्मानित करने के पश्चात् उपस्थित हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मीणा बहन।



हजारीबाग-झारखण्ड। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसान भाइयों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में गांव के मुखिया, ग्राम पंचायत के सदस्य, वार्ड पार्षद तथा मुख्य किसान सहित ब्र.कु. हर्षा बहन, ब्र.कु. तृप्ति बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



इंदौर-क्षिप्रा(म.प्र.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसान के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए समाज सेवी विष्णु पटेल, पत्रकार दिनेश डाबी, ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य।



हल्का या लाइट होना क्या?

स म य

अनुसार मनुष्य की जो अंदर की मंसा है, वो हल्के होने की ही है, लेकिन बहुत सी ऐसी छोटी-छोटी बातें हैं जिसमें मनुष्य अपने आप को भारी महसूस करता जा रहा है। हम मानते हैं कि बहुत कुछ हमें करना है लाइट में लेकिन आध्यात्मिक लाइट हमें यही सिखाती है कि हमें हल्का रहना है, लाइट रहना है। लेकिन इस लाइट को समझने के बाद भी अगर हमारे अंदर भारीपन है किसी भी तरीके का तो इस जीवन के साथ हम न्याय नहीं कर रहे हैं। हम मनुष्य कैसा सोचते हैं इसकी कुछ गहराई में हम चलते हैं। हमें इतना अच्छा जीवन मिला और हम दुनिया से बिल्कुल अलग तरह का जीवन

ऋषि, मुनि, तपस्वी क्या करते थे, अपने साथ कोई स्थूल चीज रखते ही नहीं थे, रोज भिक्षा मांगते थे और उसे ही बना कर खाते थे और रोज का रोज खत्म कर देते थे, कुछ भी रखते नहीं थे। यहां तक कि उसका जूठन भी वो नहीं छोड़ते थे कि सुबह देखकर ये याद आये कि हमने ये खाया। आप सोचो, इतनी गहराई से वो अन्न तक का भी त्याग करते थे। बहुत कुछ आज हमको मिल रहा है, खाने की वैरायटी है, पहनने की वैरायटी है, सबकुछ बहुत अच्छा मिल रहा है, लेकिन स्वैच्छा से, अपनी इच्छा से जो मुझे अच्छा लग रहा है, उस तरह का भोजन, उस तरह का पानी, उस तरह की सारी चीजें हमें

बात का है, ना मिलने का। और साथ में तुलना भी आ जाती है कि वो तो सारी चीजें प्राप्त कर रहे हैं, हमें ही नहीं मिलता है। ये जो छोटी-छोटी बातों का भारीपन है, वो हमारे योग को बढ़ायेगा, उस सूक्ष्मता की ओर ले जायेगा या भारीपन लायेगा!

अरे, अपना दायरा देखो कि आपकी बुद्धि किन-किन बातों में है। अगर हम सूक्ष्मता से चेक करें तो हम सभी किसी भी अलग-अलग विभाग में काम करने वाले इस यज्ञ में सभी के प्रति क्या एक जैसी भावना रख पाते हैं, कि अरे, बड़ा अच्छा है, वहाँ खूब अच्छी सेवा हो रही है, उनका डिपार्टमेंट बहुत अच्छा चल रहा है। बल्कि एक और भारीपन है सेवा के निमित्त आत्माओं का कि अरे, उनका ये सब इतना अच्छा क्यों हो रहा है! अब देखो, बाहर की दुनिया में कॉम्पिटेशन होना अलग बात है और जरूरी है क्योंकि उनको आगे बढ़ना है। लेकिन यहां तो हम निमित्त हैं, निमित्त रूप से सेवा कर रहे हैं, तो इन बातों में जाने से क्या हम एक नए तरह के कॉम्पिटेशन या ईर्ष्या को जन्म नहीं दे रहे हैं! इससे हमारा मन इतना भारी हो जाता है और जब आप योग करने बैठेंगे तो उस समय क्योंकि आपने कभी भी निमित्त रूप से कुछ कर्म ही नहीं किया है तो परमात्मा के साथ जुड़ना भी अति मुश्किल हो जायेगा। हम योग लगायेंगे लेकिन स्थूल चीजों से।

सूक्ष्मता लाना माना सूक्ष्मता के साथ एक-एक बात को समझना, उसको जीवन में उतारना, निमित्त भाव और निमित्त भाव और निमित्त भाव की गहरी फीलिंग हमें हल्का या लाइट बनाती है। हमारा दायरा यहाँ ही तक सीमित नहीं है, हम कपड़े से लेकर कपोल कथाओं तक अपनी बुद्धि को बिजी रखे हुए हैं, उस दुनिया में भी लोग गुप बनाकर बैठते हैं तो दुनिया के लोगों की ही बातें करते हैं। आपको पता हो कि हम भी आपस में मिलते हैं, आपस में बातें भी करते हैं, लेकिन किसकी बातें करेंगे, जिन लोगों के बीच में रहते हैं। उन बातों में भी इतनी स्थूलता है, तो उसमें हम ज्ञान चर्चा तो कर ही नहीं सकते। करेंगे तो सिर्फ वही बातें जो उनके साथ जुड़ी हुई हैं। ये हमारे भारीपन को इतना बढ़ा देता है, तो कहीं से हम मंसा सेवा कर पायेंगे! आप बैठते हैं तो वही बातें याद आती हैं जो आपने की होती हैं। इन सारी बातों से छूटना ही, इन सारी बातों से हटना ही हमको राजऋषि बनाता है और हम हल्का महसूस करने लग जाते हैं। इसलिए हल्का और लाइट होने के लिए इस सूक्ष्मता को और सूक्ष्मता के साथ समझें और आगे बढ़ें।



जी रहे हैं, हमें स्थूल चीजें भी यूज करने को मिलीं और हम उन्हें यूज कर भी रहे हैं निःसंदेह। लेकिन स्थूल चीजों की प्राप्ति, आध्यात्मिकता में कहा जाता है कि 'दान की गई गाय के दांत नहीं गिनते', इसका अर्थ यह हुआ कि हमको जो भी प्राप्ति हो रही है वो सब दान की प्राप्ति है। लेकिन उसमें भी यदि हमारी बुद्धि थोड़ी भी उलझी है तो हम फँसेंगे, उसको बचायेंगे, उसको सम्भालेंगे और उसमें लगाव बढ़ेगा।

चाहिए। अब आप ये बताओ, हल्कापन कहाँ से आयेगा! लाइट हम कैसे होंगे! समय को देखिये, कैसे बदल गया! हम सभी परमात्मा के घर में हैं, या सेवाकेन्द्रों में या अपने-अपने घरों में हैं, जो भी इस ज्ञान को, समझ को फॉलो कर रहे हैं, वे अपनी च्वाइस के आधार से कभी भी कुछ खा-पी नहीं सकते, ले नहीं सकते, रख नहीं सकते, जी नहीं सकते। लेकिन कर रहे हैं, ना मिले तो मूड खराब होता है, ये भारीपन किस



चुनार-मिर्जापुर(उ.प्र.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर ब्र.कु. तारा बहन एवं अन्य ब्र.कु. बहनों ने जैविक यौगिक खेती करने वाले किसानों को सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रदेश की कैबिनेट मंत्री रीता बहुगुणा जोशी भी उपस्थित रहे।



इंदौर-प्रेम नगर(म.प्र.)। बिजलपुर उप सेवाकेन्द्र में राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित 'भारत की शान, अन्नदाता किसान' विषयक कार्यक्रम में बद्रीलाल चौधरी, मैनेजर, इंदौर प्रीमियर कोऑपरेटिव बैंक, बिजलपुर, रामप्रकाश ओझा, मैनेजर, बैंक ऑफ इंडिया बिजलपुर, राधेश्याम पटवारी, अध्यक्ष, शासकीय कन्याशाला बिजलपुर, बाबूलाल पटेल, अध्यक्ष, खाती समाज बिजलपुर, राधेश्याम जी बागवाला, समाजसेवी, भरत पटवारी, समाजसेवी, ब्र.कु. शशि दीदी, संचालिका, इंदौर पश्चिम क्षेत्र एवं प्रेमनगर सेवाकेन्द्र, ब्र.कु. यश्वनी दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. शारदा दीदी, सेवाकेन्द्र संचालिका, बैराठी कॉलोनी, ब्र.कु. मनीषा बहन तथा बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।



जम्मू। ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग तथा स्थानीय सेवाकेन्द्र द्वारा राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. जे.पी. शर्मा, वी.सी. शेर-ए-कश्मीर यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी, राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन बहन, ब्र.कु. निर्मल बहन तथा ब्र.कु. सुरेन्द्र भाई।



डग-झालावाड़(राज.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राधेश्याम विश्वकर्मा, हरनावदा भारतीय किसान संघ तहसील, शंकर सिंह, भैंसड़िया राष्ट्र किसान संगठन अध्यक्ष, गोविंद सिंह, मंदिरपुर तहसील मंत्री किसान संघ, गोपाल व्यास, राष्ट्र किसान संघ जिला मंत्री, गोपाल सिंह, हरनावदा ग्राम समिति अध्यक्ष, ब्र.कु. नेहा दीदी तथा अन्य।



कासगंज-उ.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित गोष्ठी में ब्र.कु. राजेन्द्र भाई, पलवल हरियाणा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग उत्तर प्रदेश की संयोजिका ब्र.कु. सरोज बहन तथा बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनें उपस्थित रहे। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से खण्ड विकास कार्यालय के प्रांगण में लगाये गये किसान मेले में ब्रह्माकुमारीज द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का जनपद की जिलाधिकारी हर्षिता माथुर, विधायक देवेन्द्र सिंह राजपूत तथा बड़ी संख्या में किसानों ने अवलोकन किया।



कपड़वंज-गुज.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. माला बहन, मोहनभाई पटेल, प्रमुख, खेड़ा जिला किसान संघ, नटुभाई पटेल, रिटायर्ड एग्रीकल्चर प्रोफेसर, सरपंच, किसान तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



फरीदाबाद-संजय एन्क्लेव(हरियाणा)। भारत की आजादी के अमृत महोत्सव पर 'स्वर्णिम भारत की ओर' विषय पर मीडिया वर्ग से जुड़े लोगों के लिए कार्यक्रम के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए विश्वस्त पत्रकारिता संघ हरियाणा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हेमन्त शर्मा तथा अन्य वरिष्ठ पत्रकारों सहित ब्र.कु. ज्योति दीदी।



करही-म.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. अनिता बहन, ब्र.कु. सारिका बहन, ब्र.कु. उद्धव भाई, हिमन्त भाई, कहैयालाल भाई, महेश भाई तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



केसुरा-स्वागत विहार(ओडिशा)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में किसान भाइयों को सम्मानित करने के पश्चात् उपस्थित हैं कृतांत प्रधान, विलेज सेक्रेटरी एंड प्रेसिडेंट, केसुरा जीवन संग्राम क्लब, राजयोगिनी ब्र.कु. तपस्विनी बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका, बीजेपी नगर, भुवनेश्वर, ब्र.कु. अपर्णा बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका, अलारपुर, ब्र.कु. अंजली बहन तथा अन्य भाई-बहनें।



तेजपत्ता...

तेजपत्ता हर घर के किचन में मौजूद रहता है। भारतीय व्यंजनों में तेजपत्ता की एक अहम और महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये न सिर्फ खाने को खुशबूदार और स्वादिष्ट बनाता है बल्कि इसमें कई पौषक तत्व भी मौजूद रहते हैं। तेजपत्ता में पोटैशियम, आयरन, विटामिन सी एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन ए भरपूर मात्रा में मौजूद रहता है। ये सभी पोषक तत्व हमारे शरीर के लिए काफी लाभकारी होते हैं। वहीं तेजपत्ता अपने कई गुणों के कारण आयुर्वेद दवाइयां बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। आज हम आपको ऐसे ही तेजपत्ता के गुणकारी लाभ के बारे में बताएंगे।

1. अगर किसी को एसिडिटी की समस्या है तो उसे तेजपत्ता वाली चाय जरूर पीनी चाहिए। इसमें मौजूद एंजाइम पाचन तंत्र को ठीक रखने में मदद करती है।

2. तेजपत्ते में एंटीमाइक्रोबियल प्रॉपर्टीज होती हैं जिससे शरीर में कहीं भी घाव हुआ हो तो

काटेगा बीमारियों का पत्ता

उसे जल्दी भरने में मदद मिलती है। तो अगर किसी को घाव है तो उसे तेजपत्ता वाली चाय अवश्य दें।

3. अगर आप किसी तरह के स्ट्रेस या तनाव से जूझ रहे हैं तो इसे कम करने के लिए भी तेजपत्ता वाली चाय फायदेमंद है। तेजपत्ता शरीर में स्ट्रेस हार्मोन के लेवल को कम करता है।

4. अगर आपको कोलेस्ट्रॉल की दिक्कत है तो आप तेजपत्ता की मदद से इसे कम कर सकते हैं। इसके साथ ही तेजपत्ता आपके दिल को हेल्दी रखने में भी मदद करता है।

5. किडनी स्टोन और किडनी से जुड़ी ज़्यादातर समस्याओं के लिए तेजपत्ते का इस्तेमाल बहुत फायदेमंद होता है। तेजपत्ते को

उबालकर उस पानी को ठंडा करके पीने से किडनी स्टोन और किडनी से जुड़ी दूसरी समस्याओं में फायदा मिलता है।

6. रात को सोने से पहले तेजपत्ते का इस्तेमाल करना अच्छी नींद के लिए बहुत फायदेमंद है। तेजपत्ते के तेल की बूंदों को पानी में मिलाकर पीने से अच्छी नींद आती है।

7. छाती में, गले में सालों पुराना बलगम जमा हुआ हो जो आपको बार-बार बीमार करता है। या फिर खांसी, सर्दी, जुकाम जैसी बीमारी आपको बार-बार होती रहती है तो ये सब तब

होता है जब हमारी छाती में कफ-बलगम जमा हुआ हो, हमें बहुत जल्दी इन्फेक्शन होता है तो इसमें भी तेजपत्ते की चाय बहुत ही लाभकारी है।

इसमें 'यूकेलिप्टोल' नामक आवश्यक तैलीय पदार्थ पाया जाता है। एक अध्ययन के अनुसार ये तत्व रसोईघर में से कीड़े और तिलचट्टों को दूर रखने के लिए उत्तम है।

ऐसे बनाएं तेजपत्ते वाली चाय

2 कप पानी में 1 बड़ा या 2 छोटे-छोटे तेजपत्ते और आधा चम्मच दालचीनी पाउडर डालें और 4-5 मिनट तक उबालें। गैस बंद करके कुछ मिनट के लिए ढक कर रख दें। फिर इसे छानकर इसमें आधा नींबू और शहद मिलाकर पीएं। यह चाय आपके लिए काफी फायदेमंद होगी।



आगरा म्यूजियम-उ.प्र. एकलव्य स्पोर्ट्स स्टेडियम में चल रहे सांसद खेल कूद प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किये जाने पर खेल मंत्री अनुराग ठाकुर का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्र.कु. संगीता बहन, स्पोर्ट्स कोऑर्डिनेटर, आगरा जून, ब्रह्माकुमारीज। इस मौके पर राजकुमार चाहर, लोकसभा सांसद, बीजेपी तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. मधु बहन, संचालिका, आगरा म्यूजियम उपस्थित रहे।



मिर्जापुर-उ.प्र. राष्ट्रीय किसान दिवस पर जनपद स्तरीय एक दिवसीय किसान मेला एवं कृषि प्रदर्शनी में ब्रह्माकुमारीज द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का मिर्जापुर के डीएम प्रवीण लक्ष्मकार एवं मुख्य विकास अधिकारी श्रीमति लक्ष्मी वीएस ने निरीक्षण किया। कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिंदु बहन ने किसानों को यौगिक खेती के बारे में जानकारी दी।



मोकामा-बिहार किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रखण्ड किसान सलाहकार संदीप कुमार एवं कृषक भाइयों को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. निशा बहन तथा ब्र.कु. रोशनी बहन।



मौदा-महा. राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की सदस्य सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अर्चना दीदी, मुख्य अतिथि क्षेत्रीय जैविक खेती प्रशिक्षक कृष्णा हटवार, तालुका कृषि अधिकारी संदीप नाकड़े, कृषि अधिकारी जुमले तथा कृषि अधिकारी संध्या मकदम पंचायत समिति मौदा, बाबा साहेब सवानेरकर, उपाध्यक्ष जनता हाई स्कूल मौदा, कृष्णा हटवार, वानखेडे जी, ब्र.कु. विमल बहन, ब्र.कु. प्रांजलि बहन आदि उपस्थित रहे।



नवरंगपुर-ओडिशा राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. नीलम दीदी, उपक्षेत्रीय निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज, कमल लोचन नायक, असिस्टेंट डायरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर, नवरंगपुर, डॉ. आयुदेही मिश्रा, चीफ डिस्ट्रिक्ट एग्रीकल्चर ऑफिसर, सीडीएओ, नवरंगपुर, डॉ. प्रदुष कुमार पंडा, डिप्टी डायरेक्टर हॉर्टिकल्चर, नवरंगपुर, ब्र.कु. नमिता बहन तथा अन्य।



छतरपुर-म.प्र. तहसील लवकुशनगर के ग्राम अटकोह में किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सीता तिवारी, नवनिर्वाचित जिला महामंत्री, महिला मोर्चा भाजपा, एस.आई. आकांक्षा शर्मा, ब्र.कु. सुलेखा बहन तथा किसान भाई-बहनें।



मोतिहारी-पतौरा(बिहार) राष्ट्रीय किसान दिवस पर स्थानीय ब्रह्माकुमारीज गीता पाठशाला में 12 उन किसानों को सम्मानित किया गया जो कृषि के क्षेत्र में नया करके किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बने जिनमें यौगिक खेती के लिए ब्र.कु. श्याम भाई, गुलाब और गेन्दा फूल की खेती करने वाले लालन शुक्ला, मशरूम खेती में कृषक विकास समिति के उमाशंकर प्रसाद, धान की नई प्रजाति के किसान ब्र.कु. हरिशंकर त्रिपाठी, बाजपेई किसान संघ के अध्यक्ष और काला गेहूँ के किसान सत्यम कुमार सहित अन्य किसान शामिल हैं। इस अवसर पर ब्र.कु. विभा बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. अशोक वर्मा, ब्र.कु. शिवपूजन भाई, अधिवक्ता आदि उपस्थित रहे।



सलेमपुर-उ.प्र. राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसान सम्मान एवं जागरूकता कार्यक्रम में ब्लॉक प्रमुख अमरेश सिंह, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन, पूर्व प्राचार्य ब्र.कु. रणवीर सिंह, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. कृष्णानंद भाई, डॉ. नित्यानंद कुशवाहा, ब्र.कु. वंदना बहन, ब्र.कु. सोनी बहन, ब्र.कु. रीना बहन, स्थानीय गांव के कई ग्राम प्रधान एवं अनेक किसान भाई उपस्थित रहे।



ऑकरेश्वर-कोठी(म.प्र.) इंदौर जून के पूर्व क्षेत्रीय निर्देशक राजयोगी ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई जी के 6वें पुण्य स्मृति दिवस एवं राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मांधाता के राजा पुष्पेन्द्र सिंह, उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. श्यामा दीदी, भाजपा के जिला उपाध्यक्ष ब्र.कु. शशि कपूर, वरिष्ठ कृषक राजाराम जी इंगला ग्राम भोगावा, रामसिंह जी ग्राम थापना, ग्राम सुलगांव से राधेश्याम जी, आत्माराम भाई, लखन भाई, सीताराम भाई, महेश भाई ग्राम धनगांव, ग्राम इनपुन गोविंद भाई, ग्राम थापना से श्याम सिंह मौर्य, अन्य कृषक व ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



पन्ना-म.प्र. राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सीता बहन, संचालिका, स्थानीय उपसेवाकेन्द्र, ए.पी. सुमन, उपसंचालक, राज्य कृषि सेवा, जिला पन्ना, प्रीतम सिंह, सरपंच, ग्राम बराछ तथा अन्य।



नवाबगंज-गोंडा(उ.प्र.) राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कृषि विभाग से अरुण कुमार सोनी, प्राविधिक सहायक, वीरेन्द्र यादव, बीटीएम, राकेश सिंह भाई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. कृष्णा भाई, ब्र.कु. प्रतिमा बहन तथा अन्य किसान एवं ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

इस एक आदत को अपनाकर खुद में सकारात्मक बदलाव करें

बीते साल को हमने विदाई दी, नए साल का स्वागत किया। हर साल हम ये करते हैं। एक साल को विदाई देते हैं अगले साल के लिए बधाई देते हैं। इसका अर्थ क्या है? साल को विदाई देना मतलब एक क्लोजर(विदाई) देना। क्लोजर, उनको जो सारे विचार हमारे मन में चले, जो भावनाएं हमने पैदा की। कुछ बातें पकड़कर रखी। कुछ इमोशन्स पैटर्न, फीलिंग पकड़कर रखी। कुछ इमोशन्स को हमने समझा कि ये तो अब हमारे जीवन का एक हिस्सा बन चुके हैं। बीते साल कई ऐसी बातें हुई, ऐसी बातें आई कि बहुतों का भाग्य ही बदल गया। लगा कि ये मानसिक अवस्था दुःख, तकलीफ, चिंता, ये मेरे जीवन का एक हिस्सा बन चुकी हैं। कुछ परिस्थितियां बदली नहीं जा सकती लेकिन फीलिंग्स को बदला जा सकता है। उस इमोशनल पैटर्न को, जो हमें भी दर्द दे रहा है और कई बार हमसे वो दर्द औरों को भी पहुंच रहा है। इसको विदाई देना है।

नए साल में हम इस इमोशनल पैटर्न को बंद करेंगे। और एक बहुत पवित्र, ताकतवर, सोचने का तरीका, एक बहुत डिवाइन फीलिंग ग्रहण करेंगे। हम हालात नहीं बदल सकते, लेकिन उसके प्रति जो सोचते हैं, जैसा महसूस करते हैं, वो तो बदल सकते हैं! ताकि इस नए साल को आशीर्वाद और दुआओं के साथ आगे बढ़ाएं। आज एक और प्रतिज्ञा करनी है कि हम क्लोजर और ब्लेसिंग मतलब विदाई व बधाई, सिर्फ एक दिन नहीं करेंगे। इमोशन को क्लोजर दें, आशीर्वाद, शुभभावना के साथ इस साल को जीएं।

आज से एक छोटी-सी आदत बना लीजिए। इसमें जादुई ताकत है। यह हमारी मानसिक अवस्था पूरी तरह बदल सकती है। भावनाएं बदल सकती हैं। स्वास्थ्य पर इसका असर आ सकता है और रिश्ते बहुत प्यारे बन जाएंगे। छोटी-सी आदत ये है - रोज रात सोने से पहले क्लोजर



डॉ. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

कुछ परिस्थितियां बदली नहीं जा सकती लेकिन फीलिंग्स को बदला जा सकता है।

करें, उस दिन को विदाई दें। और हर रोज अगले दिन के लिए बधाई दें, आशीर्वाद दें। मतलब पूरे दिन के अंदर बहुत बातें घटती हैं, अब बातें तो हर रोज आएंगी। कभी कोई बातें छोटी-छोटी होती हैं, कभी कुछ बहुत बड़ी आ जाती हैं। लेकिन बातें, परिस्थिति, लोग ये तो हर रोज ही हैं। लेकिन हर रोज जब वो बातें आती हैं तो हम एक प्रतिक्रिया पैदा करते हैं। हम उस हर दृश्य के बारे में, हर व्यवहार के बारे में, दिमाग में एक प्रतिक्रिया पैदा करते हैं। इससे एक पैटर्न बनना शुरू होता है। अब हमारी बहुत सारी प्रतिक्रियाएं, विचार, शब्द बहुत प्यारे हैं। बहुत सम्मानीय हैं। उन्हें हमें अगले दिन के लिए आगे लेकर जाना है। अगर पूरे दिन में कोई ऐसा विचार, शब्द व्यवहार आया, जो अच्छा नहीं है तो उसको हम नकारात्मक भी नहीं बोलेंगे। हमारे बहुत सारे विचार और शब्द नकारात्मक नहीं हैं लेकिन असहज हैं, जो हमारी आंतरिक शक्ति घटाते हैं। जैसे कि मन के ऊपर एक दाग लग जाता है। लेकिन वो दाग दूसरों के

व्यवहार और परिस्थिति से नहीं, वो दाग हमारी प्रतिक्रियाओं के होते हैं।

आज हमें ये पक्का करना है कि इसको एक आदत बना लेंगे, हर रोज के लिए। अगर आज सारे दिन में मैंने किसी भी बात या किसी भी व्यक्ति के बारे में ऐसे विचार पैदा किए कि ये ऐसे क्यों है, ये ऐसा क्यों करते हैं, इनको ऐसा नहीं करना चाहिए, ऐसा भी कोई करता है क्या, ये बात मेरे साथ क्यों हुई, मेरे साथ ही ऐसा बार-बार क्यों होता है, मेरे ही भाग्य में ये क्यों लिखा है। दूसरे तो बहुत खुश हैं वो बहुत सफल हैं। मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है। ये एक लम्बी चैन ऑफ थॉट्स होती है।

जैसे हम हर रोज घर की सफाई करते हैं, शरीर की सफाई करते हैं। असल में हम थोड़ा-सा लगा मैल, थोड़ी-सी आई धूल को रोज साफ करते हैं लेकिन मन पर आने वाली धूल को हम साफ ही नहीं करते हैं। और ये धूल जमा होते-होते एक दाग तब बन जाती है जब हम इसको लेकर सो जाते हैं। अगर हम उस निगेटिव पैटर्न के साथ सो जाते हैं, मतलब सोने से पहले अगर हम उस सोच को बदलते नहीं, अगर हम उस धूल को साफ नहीं करते हैं तो वो थॉट्स जो हमारे मन के ऊपर थे, वो जो धूल ऊपर थी, जब हम सोने जाते हैं तब हमारा अवचेतन मन खुलता है। वो धूल जो ऊपर थी, वो दर्द जो ऊपर था, वो गहरा चला जाता है। वो हमारे अवचेतन में चला जाता है। अगर उसी दिन हम सोने से पहले उसको साफ कर दें तो वो बहुत थोड़ा ही प्रभाव डालेंगे। हम उसको बदल दें क्योंकि हम उस थॉट को विदाई दे रहे हैं और हम बधाई दे रहे हैं। मतलब हम आशीर्वाद पैदा कर रहे हैं। नया साल भले ही दस्तक दे चुका है लेकिन इस आदत को अपनाकर खुद में सकारात्मक बदलाव कर सकते हैं।

यह जीवन है

हम जीवन भर अलग-अलग एहसास में ही जीते हैं, सामान्यतः सबसे ऊंचा एहसास सुख का होता है, सुख का एहसास सद्कार्यों से ही प्राप्त होता है, और सेवा, सत्संग तथा सर्व के प्रति शुभ विचार ही सुख के मूल आधार होते हैं। अतः हमारे जीवन में सुख होगा या दुःख यह हमारे कर्मों पर निर्भर करता है। कर्म अर्थात् हम अपने संकल्पों से जन्म दर जन्म कौन-सी ऊर्जा फैलाते आये हैं। इसीलिए सुख चाहिए तो सोच को शुद्ध बनाओ, बोल और कर्म अपने आप शुद्ध हो जाएंगे।



संधवा-म.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ कृषि अधिकारी अनिता बर्डे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. छाया बहन।



राजकोट-मेहुल नगर(गुज.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सरपंच हंसाबेन पटेल, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. चेतना बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित 90 किसान भाई-बहनों उपस्थित रहे।



जबलपुर-भंवरताल(म.प्र.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में जवाहरलाल कृषि विश्व विद्यालय के सीनियर साइंटिस्ट एग्रोनोमिस्ट डॉ. एस.बी. अग्रवाल, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भावना बहन, ब्र.कु. वर्षा बहन, प्रसिद्ध सर्जन डॉ. एस.के. पांडे, ब्र.कु. संदीप भाई, पत्रकार पवन पांडे तथा बड़ी संख्या में कृषक उपस्थित रहे।



नवापारा-राजिम(छ.ग.)। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में धार्मिक प्रभाग के क्षेत्रीय संयोजक ब्र.कु. नारायण भाई, ईंदौर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा बहन, मुख्य अतिथि कृषक परिवार से महेश साहू, शासकीय व्याख्याता हेमंत साहू, ब्र.कु. प्रिया बहन तथा बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनों उपस्थित रहे।



रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपसंचालक कृषि अधिकारी विजय चौरसिया, भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय सदस्य दयाराम धाकड़, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी, भारतीय किसान संघ के जिला अध्यक्ष ललित पालीवाल, भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष विप्लव जैन, नायब सूबेदार राधेश्याम पाटीदार तथा किसान भाई-बहनों सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों उपस्थित रहे।



राजनगढ़-छ.ग.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक एवं अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष दलेश्वर साहू, विशिष्ट अतिथि शासकीय कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. आर.एन. सिंह, शासकीय कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बी.एस. राजपूत, विधायक दलेश्वर साहू की धर्मपत्नी श्रीमति जयश्री साहू, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. प्रभा बहन, वरिष्ठ किसान खेल राम साहू तथा बड़ी संख्या में अन्य किसान भाई-बहनों उपस्थित रहे।



राजगढ़-म.प्र.। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए हरीश कुमार मालवीय, उप संचालक, कृषि, डॉ. कायमसिंह, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र राजगढ़, ब्रह्माकुमारीज की जिला प्रभारी ब्र.कु. मधु दीदी, दूरदर्शन केन्द्र संचालक किसान पुत्र पुरुषोत्तम नायक, कृषि विकास अधिकारी राठौर जी, होर्टिकल्चर वैज्ञानिक लाल सिंह, मृदा वैज्ञानिक कुमरावत सिंह, कृषि विस्तार अधिकारी सत्येन्द्र कुमार सोनी तथा किसान नारायण सिंह मोतीपुरा।



सिवनी-म.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मोरिस नाथ, डिप्टी डायरेक्टर, कृषि विभाग, सिवनी, पी.सी.एम. ऑर्गेनिक फार्म के संचालक एवं समाज सेवी अंकित मालू, निखिल सिंह, कृषि वैज्ञानिक, सिवनी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गीता बहन, ब्रह्माकुमारीज की जिला प्रभारी ब्र.कु. ज्योति बहन, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. रामेश्वरी बहन, ब्र.कु. नीतू बहन तथा किसान भाई उपस्थित रहे।



उमरेड-महा.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में पंजाबराव आंधोरे, सभापति, कृषि उत्पन्न बाजार समिति उमरेड, डॉ. नारायण लांबट, कृषि भूषण पुरस्कार प्राप्त किसान चिखलापार, कृष्णकांत मिश्रा, वार्ताहर लोकमत समाचार उमरेड, सी.डी. कोल्हे, तालुका कृषि अधिकारी, उमरेड, सहारे जी, कृषि अधिकारी, पंचायत समिति उमरेड, ब्र.कु. विजय मस्के, ग्राम विकास अधिकारी तारणा, ब्र.कु. तेजस्विनी बहन तथा बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनों शामिल रहे।

परमात्म ऊर्जा

जहाँ निमित्त भाव है वहाँ निर्माण भाव ऑटोमेटिकली आ जाता

बापदादा क भी - कभी बच्चों के जमा का खाता देखते हैं। तो कहाँ-कहाँ मेहनत ज़्यादा है लेकिन जमा का फल कम है। कारण? दोनों तरफ की सन्तुष्टता की कमी। अगर सन्तुष्टता का अनुभव नहीं किया, चाहे स्वयं, चाहे दूसरे तो जमा का खाता कम होता है। बापदादा ने जमा का खाता बहुत सहज बढ़ाने की गोल्डन चाबी बच्चों को दी है। जानते हो वह चाबी क्या है? मिली तो है ना! सहज जमा का खाता भरपूर करने की गोल्डन चाबी है- कोई भी मन्सा-वाचा-कर्मणा, किसी में भी सेवा करने के समय एक तो अपने अन्दर निमित्त

भाव की स्मृति हो। निमित्त भाव,

निर्माण भाव, शुभ भाव, आत्मिक स्नेह का भाव, अगर इस भाव की स्थिति में स्थित होकर सेवा करते हो तो सहज आपके इस भाव से आत्माओं की भावना पूर्ण हो जाती है। आज के लोग हर एक का भाव क्या है, वह नोट करते हैं। निमित्त भाव से कर रहे हैं व अभिमान के भाव से! जहाँ निमित्त भाव है वहाँ निर्माण भाव ऑटोमेटिकली आ जाता है। तो चेक करो- क्या जमा हुआ? कितना जमा हुआ? क्योंकि इस समय संगमयुग ही जमा करने का युग है। फिर तो सारा कल्प जमा की प्रालम्भ है।

जो परमात्म संग के रंग में प्राप्त किया वो सबको बांटो



परमात्मा! कहेंगे ज़रूर। तो आप परमात्म बच्चों को अभी दुखियों का सहारा बनना है। उन्हीं का शुभ भावना शुभ कामना द्वारा, बाप द्वारा प्राप्त हुई किरणों द्वारा सहारा बनो। फिर भी आपका परिवार है ना! तो परिवार में एक-दो को सहयोग देते हैं ना! तो नाम ही है सह योग, श्रेष्ठ योग। वही साधन है सहारा देने का। सन्देश भी भेजा था कि समय फिक्स करो। ऐसे नहीं हो जायेगा जैसे ट्रैफिक कंट्रोल अमृतवेला निश्चित है तो करते हो ना! ऐसे अपने कार्य प्रमाण यह मन्सा सेवा भी अभी के समय प्रमाण अति आवश्यक है। तो समय निकालो रहमदिल बनो, कल्याणकारी बनो। आपका स्वमान क्या है? विश्व कल्याणकारी। तो रहम आता है कि हो जायेगा? इसमें अलबेले नहीं बनना क्योंकि जिन्हें को आप साक्षात् देंगे वही आपके भक्त बनेंगे इसलिए क्या करना है? है अटेन्शन?

बापदादा ने तो बहुत समय से अचानक का पाठ पढ़ाया है। लेकिन अभी प्रत्यक्ष रूप में देख करके अभी अपना काम शुरू करो, घबराओ नहीं। कहानी सुनाते हैं ना - चारों ओर आग लगी लेकिन परमात्मा के बच्चे सेफ रहे। तो अभी भी बच्चे तो सेफ हैं ना! पेपर तो आने ही हैं लेकिन आपका डबल काम है। एक तो निर्भय होके सामना करो, दूसरा अपने भक्त और अपने दुःखी भाई-बहनों की सेवा भी कौन करेगा? आप प्रभु के संग में रंगे हुए हो तो जो परमात्मा के संग के रंग में प्राप्त किया है वह अपने भाई-बहनों को, भक्तों को खूब प्यार से दिल से बांटें। दुःख के समय कौन याद आता है? फिर भी परमात्मा चाहे समझें चाहे नहीं समझें लेकिन मजबूरी से भी हे बाप! हे

अगर इतने सभी ने अपने स्वमान को प्रैक्टिकल में लाया तो आत्मायें अभी भी संगम पर आपके दिल से गीत गायेगी वाह परमात्म बच्चे वाह! तो पूर्वज हो ना! आवाज सुनने आता है भक्तों का? थोड़ा अपने को सावधान करो। दुखियों का सहारा बनना ही है तो आवाज सुनने आयेगी।



आंवला-बरेली (उ.प्र.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्लॉक प्रमुख श्रीमति आरती यादव, विभिन्न गांवों से आये ग्राम प्रधान, ब्र.कु. पार्वती बहन, ब्र.कु. नीता बहन तथा अन्य।

कथा सरिता



पहला दीपक बोला, "मैं हमेशा बड़ा बनना चाहता था। सुंदर और आकर्षक घड़ा बनना चाहता था पर क्या करूँ जरा-सा दीपक बन गया।"

दूसरा दीपक बोला, "मैं भी अच्छी भव्य मूर्ति बनकर किसी अमीर आदमी के घर की

चौथा दीपक खामोश रहकर उनकी बातें सुन रहा था। अपनी-अपनी प्रतिक्रिया देने के बाद तीनों दीपों ने चौथे दीपक से भी अपनी जिंदगी के बारे में कुछ

अंधेरे को दूर करने का साहस रखता है।

मैं वो साहसी दीपक हूँ जिसके जलते ही अंधेरा छू मंतर हो जाता है। मैं आभारी हूँ उस कुम्हार का जिसने मुझे ऐसा रूप दिया कि मुझे भगवान के सामने मंदिरों में प्रज्वलित किया जाता है। मेरी रोशनी में पढ़कर ना जाने कितने होनहार बच्चे आज बड़े-बड़े ऑफिसर बन गए हैं और देश की सेवा कर रहे हैं। मेरा प्रकाश सिर्फ अंधेरे को ही दूर नहीं करता बल्कि एक नई उम्मीद और नई ऊर्जा का संचार करता है। चौथे दीपक की बातें सुनकर अन्य तीनों दीपों को भी अपने जीवन का महत्व समझ में आ गया।

दोस्तों, अक्सर हम इंसान को जो मिलता है या जो हम हैं उससे संतुष्ट नहीं होते और उन तीन दीपकों की तरह अपने कुम्हार यानी ईश्वर से शिकायत करते रहते हैं लेकिन अगर हम ध्यान से देखें तो हमारा जीवन अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है और हम जो हैं उसी रूप में इस जीवन को सार्थक बना सकते हैं। इसलिए चौथे दीपक की तरह हमें भी जो हैं उसमें संतुष्ट होकर अपना सर्वश्रेष्ठ जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

हमारे जीवन की महता



शोभा बढ़ाना चाहता था, पर क्या करूँ कुम्हार ने मुझे एक छोटा-सा दीपक बना दिया।"

तीसरा दीपक बोला, "मुझे बचपन से ही पैसों से प्यार है, काश मैं गुल्लक बनता तो हमेशा पैसों से भरा रहता। पर मेरी किस्मत में ही दीपक बनना लिखा होगा।"

एक मकड़ी थी। उसने आराम से रहने के लिए एक शानदार जाला बनाने का विचार किया और सोचा कि इस जाले में खूब कीड़े, मक्खियाँ फँसेंगी और मैं उसे आहार बनाऊँगी और मजे से रूँगी। उसने कमरे के कोने को पसंद किया और वहाँ जाला बुनना शुरू किया। कुछ देर बाद आधा जाला बुन कर तैयार हो गया। यह देखकर वह मकड़ी काफी खुश हुई कि तभी अचानक उसकी नजर एक बिल्ली पर पड़ी जो उसे देखकर हँस रही थी।

मकड़ी को गुस्सा आ गया और वह बिल्ली से बोली, "हँस क्यों रही हो?" हँसू नहीं तो क्या करूँ, बिल्ली ने जवाब दिया। यहाँ मक्खियाँ नहीं हैं ये जगह तो बिल्कुल साफ सुथरी है। यहाँ कौन आयेगा तेरे जाल में।"

ये बात मकड़ी के गले उतर गई। उसने अच्छी सलाह के लिए बिल्ली को धन्यवाद दिया और जाला अधूरा छोड़कर दूसरी जगह तलाश करने लगी। उसने ईधर-उधर देखा तो उसे एक खिड़की नज़र आयी और फिर उसमें जाला बुनना शुरू किया कुछ देर तक वह जाला बुनती रही, तभी एक चिड़िया आयी और मकड़ी का मज़ाक उड़ाते हुए बोली, "अरे मकड़ी, तू भी कितनी बेवकूफ है।"

"क्यों?" मकड़ी ने पूछा। चिड़िया उसे समझाने लगी, "अरे यहाँ तो खिड़की से तेज हवा आती है। यहाँ तो तू अपने जाले के साथ ही उड़ जायेगी।"

मकड़ी को चिड़िया की बात ठीक लगी

कहने को कहा।

चौथे दीपक ने कहा - भाईयों कुम्हार जब मुझे बना रहा था तो मैं बहुत खुश हो रहा था, क्योंकि वह मुझे बनाते वक्त प्रसन्न था। उसने जब मुझे बनाया तो मैं अपने जीवन के प्रति कृतज्ञ हो गया कि मैं एक बिखरी हुई मिट्टी से एक सुंदर दीपक बन गया जो

और वह वहाँ भी जाला अधूरा बना छोड़कर सोचने लगी अब कहाँ जाला बनाया जाये। समय काफी बीत चुका था और अब उसे भूख भी लगने लगी थी। अब उसे एक अलमारी का खुला दरवाजा दिखा और उसने उसी में अपना जाला बुनना शुरू किया। कुछ जाला बुना ही था तभी उसे एक कॉक्रोच नज़र आया जो जाले को अचरज भरी नज़रों से देख रहा

हर कार्य हो सूझ-बूझ से



था। मकड़ी ने पूछा, "इस तरह क्यों देख रहे हो?"

कॉक्रोच बोला, अरे यहाँ कहाँ जाला बुनने चली आयी ये तो बेकार की अलमारी है। अभी ये यहाँ पड़ी है कुछ दिनों बाद इसे बेच दिया जायेगा और तुम्हारी सारी मेहनत बेकार चली जायेगी। यह सुनकर मकड़ी ने वहाँ से हट जाना ही बेहतर समझा। बार-बार प्रयास करने से वह काफी थक चुकी थी और उसके अन्दर जाला बुनने की ताकत ही नहीं बची थी। भूख की वजह से वह परेशान थी। उसे पछतावा हो रहा था कि अगर पहले ही जाला बुन लेती

तो अच्छा रहता। पर अब वह कुछ नहीं कर सकती थी उसी हालत में पड़ी रही। जब मकड़ी को लगा कि अब कुछ नहीं हो सकता तो उसने पास से गुजर रही चींटी से मदद करने का आग्रह किया। चींटी बोली, "मैं बहुत देर से तुम्हें देख रही थी, तुम बार-बार अपना काम शुरू करती और दूसरों के कहने पर उसे अधूरा छोड़ देती, और जो लोग ऐसा करते हैं उनकी

यही हालत होती है। और ऐसा कहते हुए वह अपने रास्ते चली गई और मकड़ी पछताती हुई निढाल पड़ी रही। हमारी जिंदगी में भी कई बार कुछ ऐसा ही होता है, हम दूसरों की बातों को सुनकर अपना कार्य करना ही छोड़ देते हैं। बाद में जब हमें पता चलता है कि हम तो अपनी मंजिल के बहुत करीब थे तब हमारे हाथ पछतावे के अलावा और कुछ नहीं लगता। इसीलिए हमें हर कार्य अपनी सूझ-बूझ से, सोच-विचार कर करना चाहिए।



कोरापुट-ओडिशा। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में किसान भाई-बहनों को सम्मानित करने के पश्चात् सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. स्वर्णा बहन।



महेश्वर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के 'विश्व दर्शन भवन' में आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. अनिता बहन तथा बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनों सहित ब्र.कु. भाई-बहनों उपस्थित रहे।

जिंदगी निखार के लिए... इन पाँचों चीजों पर अपना सौ फीसद दें

हमारे जीवन की ज़्यादातर ऊर्जा अपने ही भीतर चल रहे द्रव्य से बाहर निकलने में ही लग जाती है। यह काम करें या न करें, यह सही है या गलत। हम इसी में उलझे रहते हैं। इन द्रव्य से निकलना पड़ेगा वरना दूसरों की बर्बादी के जो किस्से सुनते हैं, वे किसी दिन हमारी ही दास्ता बन जाएंगे। बड़ा अजीब-सा द्रव्य है यह।

हम शान्त भी रहना चाहते हैं लेकिन अशांति के सारे काम करते चले जाते हैं। मुख्यतः वाणी से ऐसे बीज बोते जो दस गुणा रिटर्न में आते हैं। कर्म करते, चलते-चलते बेवजह प्राणी को छेड़ते, प्रकृति को नुकसान पहुंचाते, छोटों को छेड़ते, चुगली करते, यह सब दस गुणा होकर हमारे पास ही लौटते हैं। कुल मिलाकर जिंदगी को जटिल बना लेते हैं। जबकि कोई एक बात तय कर जीवन को आसान बनाना चाहिए।

वैसे तो हम मनुष्यों की जिंदगी में बहुत सी स्थितियाँ ऐसी होती हैं, जो हमारे वश में नहीं होती हैं। पता नहीं कब क्या हो जाए। जैसे अचानक बारिश होना, अर्थह्रास होना, कड़के की ठंड हो जाये इत्यादि। ये हमारे वश में नहीं है। कुछ भी हो सकता है। लेकिन कुछ चीजों पर हमारा नियंत्रण हो सकता है और उन पर सौ फीसदी ताकत लगाकर काम किया जाए।

जिंदगी में पाँच बातें ऐसी हैं जिन पर हमारा वश चल सकता है- भोजन, नींद, भोग, योग और भगवान। जब हम पर काम करें तो शत-प्रतिशत झोंक दें। द्रव्य से बाहर निकल जाएंगे और फिर उसके बाद जो भी करेंगे पूरी श्रद्धा, संकल्प और दृढ़ता के साथ करेंगे। जीवन में कोई उब नहीं होगी। इनको वश में करने के लिए कोई अधिक वक्त नहीं देना है। ये हमारे जीवन के रूटीन में हैं।

जिंदगी जीने के लिए यदि इन पाँचों चीजों को उपयुक्त व व्यवस्थित रूप से स्थान दें तो सफल होने से कोई रोक नहीं सकता। और दूसरा, अगर आपकी जिंदगी स्वास्थ्य, सभ्यता व परमशक्ति से जुड़ी होती है तब हर रुकावटें भी स्वतः ही किनारा कर लेती हैं।

बस थोड़ा-सा आत्म केन्द्रित हो जाएं। ये पाँच चीजें वश में होते ही आपकी पकड़ पूरे जीवन पर हो जायेगी। इसी में शांति है।

हमारे रूटीन में इन पाँच चीजों पर गौर करें

भोजन:- भोजन जितना हल्का होगा उतना ही आप अपनी बहुमूल्य ऊर्जा बचा पाएंगे। भोजन हल्का भी हो, समय पर भी हो। ज़्यादा मसालेदार व जीभ पसंद न हो।

नींद :- नींद भी पर्याप्त हो। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि युवाओं की कम से कम छः घंटे गहरी नींद होनी चाहिए। जिससे

बॉडी बिल्कुल ही रिलेक्स हो जाती है गैजेट्स से दूर रहना है। सोने से पूर्व 10 मिनट अपने आपको हल्का कर लें, वैचारिक बोझ को शांत कर दें। स्नान आदि करके ही शयन पर जायें।

तीसरा योग:- हमारे रूटीन में योग का होना बहुत महत्वपूर्ण है, इसे जीवन का हिस्सा बनाएं। योग का मतलब ही है अपने आपसे जुड़ना। यानी कि अपने आपको जानना। अपनी भीतर छिपी शक्तियों को, विशेषताओं को, सही मायने में आंकलन करना, समझना। इस आधे घण्टे अपने ऊपर फोकस होना। बाकी चारों चीजों को व्यवस्थित करने में अति मददगार होंगे।

भोग:- भोग यानी हमारे पास उपलब्ध वैभव, साधन, सामग्री जो इस्तेमाल करते हैं, उनके प्रति समझ का होना। वे अपनी कार्य पद्धति में शामिल कर लक्ष्य प्राप्ति में सहयोगी बनाना।

भगवान:- अक्सर हम इसे टालने में हिच-किचाते नहीं हैं। भगवान हमारी डेली रूटीन में रखना बहुत ज़रूरी है। इसे साथी बनाकर हर कर्म करना। ये आदत बनानी होगी। उस सर्वशक्तिवान की ऊर्जा हर कर्म में जोड़ें। अकेले नहीं, अकेले कर्म करेंगे तो थक जायेंगे। लेकिन उनके साथ कर्म करेंगे तो कर्म सही भी होगा, जल्दी भी होगा, गुणवत्तायुक्त होगा। एक से दो भला। भगवान को साथ रखेंगे तो भविष्य भाग्य भी चमकेगा।

वश में होने वाली चीजों पर पकड़ बना के जिंदगी जियेंगे। जहाँ सुख-शांति की खुशबू होगी।

ब्र.कु. दिलीप राजकुले, शांतिवन

एक नई सोच

आज प्रायः हर इंसान अपने करीबी लोगों को सुख देने के लिए, बड़े से बड़ा पद तथा धन संपत्ति अर्जित करने के लिए दिन-रात एक करके लगा हुआ है। जबकि हमें इस भ्रमजाल से मुक्त होने की ज़रूरत है, क्योंकि धन संपत्ति अथवा ऊँचे पद से हम अपने करीबी लोगों को ज़्यादा सुविधा या सहूलियत तो उपलब्ध करा सकते हैं, लेकिन उन्हें सच्चा सुख नहीं दे सकते। सच्चा सुख हम किसी को भी उसकी भावनाओं का बहुत ही महीनता से ख्याल रख कर ही दे सकते हैं। यह समझ अगर हमें अच्छे से नहीं हुई, तो निश्चित मानें, हम जीवन भर एक खोखला जीवन ही मिथ्या अहंकार का पोषण करते हुए गुजार देंगे। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम बड़े-बड़े महलों में बसने वालों के जीवन को करीब से देखके अनुभव कर सकते हैं कि उनके जीवन में सुविधाएं तो हैं, पर सच्चे सुख की प्यास सदा बनी रहती है।



बेला-उमरेड(महा.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर ब्रह्माकुमारीज के स्थानीय सेवाकेन्द्र एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में गजानन गांवडे, पंचायत समिति उपसभापति उमरेड, विलासराव मुंडे, ग्राम पंचायत सदस्य व प्रगतिशील शेतकरी, राजयोगिनी ब्र.कु. रेखा दीदी, उमरेड सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. पटले, पूर्व जल संवर्धन अधिकारी बेला क्षेत्र, ब्र.कु. विद्या बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. बापुराव, ब्र.कु. विशाल तथा किसान भाई-बहनों उपस्थित रहे।



सिंगोली-म.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा सामुदायिक भवन में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. अंकिता बहन, नगर पालिका अध्यक्ष सुनीता मेहता, पूर्व प्रधान राधेश्याम गुप्ता, रावतभाटा, ब्र.कु. गोपाल भाई, सिंगोली तथा बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनों सहित ब्र.कु. भाई-बहनों उपस्थित रहे।



बीना-म.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसान के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ कृषि उद्यानिकी अधिकारी प्रवीण साहू, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज दीदी, सिंधी पंचायत के अध्यक्ष मंसाराम सुंदरानी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. जानकी दीदी, उन्नतशील और नशा मुक्त किसान नरेन्द्र सिंह राजपूत, ब्र.कु. सरस्वती, मुन्नालाल साहू तथा अन्य किसान भाई-बहनों सहित ब्र.कु. भाई-बहनों उपस्थित रहे।



भरतपुर-रूपबास(राज.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में आगरा सबजोन सह प्रभारी एवं भरतपुर सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कविता बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बबीता बहन, चकोरा ग्राम पंचायत के सरपंच वीर बहादुर सिंह, पंचायत मंडल समिति सदस्य सुनील जी, राकेश बत्रा, किसान नेता हरभान सिंह, रिटायर्ड पूर्व पंचायत प्रसार अधिकारी जगदीश जोशी, गिरवर सिंह, भुसावर उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. प्रवीणा बहन, ब्र.कु. मिथुन भाई तथा बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनों सहित ब्र.कु. भाई-बहनों उपस्थित रहे।



नवापारा-राजिम(छ.ग.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए महेश साहू, एरिया मैनेजर, महिन्द्रा ट्रैक्टर, हेमंत साहू, व्याख्याता, प्रेम शंकर, प्रबंधक, कृषि खाद भंडार, ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. प्रिया बहन, तोरण देवांगन, कृषक व जमींदार आदि।



विजयवाड़ा-आ.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा आठ गांवों में योगिक खेती के प्रति जागरूक करने एवं पवित्र जीवन जीते हुए योगिक खेती करने वाले किसानों को सम्मानित करने के अंतर्गत तुल्लुरु गांव, अमरावती में 150 किसान भाई-बहनों एवं मीडिया पर्सनल्स को सम्बोधित करने के पश्चात् अप्पा राव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारती बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनों।

हम सभी एक विषय को लेकर आज तक बहस करते आ रहे हैं कि परमात्मा को किसने देखा है। वो है भी या नहीं। है तो कैसा है और नहीं है तो क्यों नहीं है। ऐसे उलझन वाले प्रश्नों के साथ सभी अपने आप को उलझाये हुए हैं। वाल्मिकी, कबीरदास, तुलसीदास, ईसा मसीह ने जो भी शास्त्र या महाकाव्यों की रचना करने वाले हैं, उन्होंने उस समय के हिसाब से अपने मन के अंदर परमात्मा के स्वरूप को बसाकर जिस रूप से चित्रित किया, लोगों ने जब उन महाकाव्यों को पढ़ा, महान रचनाओं को पढ़ा तो उनको पढ़कर उन्होंने वैसे मानसिक चित्र बनाये और मंदिरों की स्थापना कर दी कि शायद भगवान यही हैं। अब जिन्होंने परमात्मा के बारे में चर्चा की या कुछ लिखा, उन्होंने उस समय अपने विचारों से परमात्मा के भाव को या ऐसे कह सकते हैं कि परमात्मा कैसा होगा उस भाव को बड़े ही प्रेक ढंग से और सजीव मन से समझा। लेकिन उस बात को कहने के लिए उन्होंने जैसा वर्णन किया, लोगों ने वैसा माना। लेकिन ये कोई भगवान नहीं थे, ये महान पुरुष थे, इन्होंने अपने विचारों से उस समय के समाज को प्रभावित किया तो लोगों ने इन्हें भी भगवान के टाइटल से नवाजा। इससे एक बात तो सिद्ध हो रही है कि अगर किसी क्षेत्र में कोई व्यक्ति बहुत नाम कमाये, उसमें महारत हासिल कर ले, तो उस समय के लोग उस पटीकुलर फ्रील्ड के लिए कहते कि ये तो जैसे हॉकी के भगवान हैं या क्रिकेट के या बैडमिंटन के या फुट बॉल के, ये सब उदाहरण के लिए हैं। लेकिन वो भगवान तो नहीं है ना, ना उनके पास कोई चमत्कारिक शक्ति है, ना ऐसा कोई दिव्य अस्त्र है। लेकिन नवाजा गया, कहा गया, उनकी विचार पद्धति के आधार से। जब हम इन महाकाव्यों को पढ़ते

हैं तो उनमें इनके द्वारा लिखे गये या कहे गये विचार के आधार से देखते हैं तो ये लोग परमात्मा को निराकार मानते हैं, उसके अस्तित्व को मानते हैं, लेकिन निराकार को समझने की ताकत नहीं है। आप देखिये जो भी इस दुनिया में परमात्मा के बारे में कोई बात करता है, वो हमेशा उन चीजों के साथ उसे जोड़ता है जो इन आँखों से देखी जा सकती हैं। लेकिन वो परमात्मा नहीं है। जैसे प्रकृति को देखकर, मूर्ति को देखकर हमारे अंदर भाव जरूर उठते हैं लेकिन उन मूर्तियों में परमात्मा के अस्तित्व को हम थोड़े ही

कि इस दुनिया में इन आँखों से जो भी चीजें दिखाई दे रही हैं वो सारी पदार्थ हैं या मैटर है। अब विज्ञान की ही मान लें तो विज्ञान खुद कहता है कि ऊर्जा न तो पैदा होती है, न नष्ट होती है। सिर्फ वो अपने स्वरूप को बदल देती है। इससे एक प्रश्न उठता है कि जो न पैदा होती है और न नष्ट होती है उस पदार्थ का जन्म कहाँ से हुआ? तो अगर विज्ञान इसी के बारे में तर्क दे दे सबसे पहले, तब तो उसकी बातों पर कुछ विश्वास किया जा सकता है। वो भगवान को या ईश्वर को या परमात्मा को कैसे पूव

कैसे हुआ इसका ही उत्तर उसके पास नहीं है तो फिर परमात्मा को कैसे जानेंगे! जो साइंस पूरी तरह से पदार्थ विज्ञान है और वो जो देखता है उसे मानता है। परमात्मा तो न दिखता है और न साइंस के द्वारा जाना जा सकता है।

हमारी नज़र में परमात्मा कौन?

परमात्मा तर्क और विज्ञान दोनों से परे एक शक्ति है जो सिर्फ अनुभव और अध्यात्म के द्वारा जानी जा सकती है। हमारी नज़रें सामने कोई भी चीज जो पड़ी हुई है उसको देखने के लिए भी कई बार सूक्ष्मदर्शी या चश्मे का सहारा लेती है और अगर आप इसको सूक्ष्मदर्शी से देखें तो हरेक चीज में मूवमेंट हो रही है। यानी हर पदार्थ में इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन, मेसॉन, पाइमेसॉन आदि-आदि घूम रहे हैं। तो हम उनको स्थिर देख ही नहीं सकते। इसलिए जब भी हम कोई चित्र या मूर्ति देखते हैं, तो कभी ऊपर देखते कभी नीचे, कभी आँखें देखते कभी पैरों को। ये सारी जड़ मूर्तियाँ हमारे ध्यान को एकाग्र करवा ही नहीं सकतीं। जैसे हमने बात की कि इन आँखों से परमात्मा को देखना और विज्ञान की नज़रों से देखना, दोनों तर्कसंगत बिल्कुल भी नहीं है। लेकिन उसका अस्तित्व है, ये भी हमको मानना है। इस दुनिया में कुछ चीजें तर्क से परे हैं जिनको हम मानकर चलते हैं, अंधविश्वास से नहीं, अनुभव से। जैसे उदाहरण में अगर जल्दी से बोला जाये तो लोग कहते हैं कि एक के बाद दो आता है, दो के बाद तीन आता है, तीन के बाद चार आता है, लेकिन ये आपका एक विश्वास हो सकता है लेकिन सत्य नहीं है। वो ऐसे कि एक के बाद दो आता है ये फैक्ट

नहीं है, एक के बाद 1.1, 1.2, 1.3, 1.4, पौने दो, फिर दो आता है। एक के बाद सीधे दो थोड़े ही आता है। लेकिन हम मानते हैं कि एक के बाद दो आता है। ये हमारा विश्वास है और इसी के आधार से हम चल रहे हैं। तो परमात्मा है, लेकिन उसके लिए पहले हमें खुद के अस्तित्व को समझना पड़ता है। जिस प्रकार हम एक शरीर या पदार्थ से अलग पराभौतिक (मेटा फिजिकल एनर्जी) शक्ति हैं, जो हमारे इस पूरे शरीर रूपी पदार्थ को एनर्जाइज करती है। उसी प्रकार से परमात्मा भी एक पराभौतिक शक्ति है, सिर्फ वो पदार्थ के अन्दर प्रवेश नहीं करता, वो है, स्थिर है, एक स्थान पर है, अजर है, अमर है, अविनाशी है, अव्यक्त है, निराकार है, लेकिन है। अब उस परमात्मा निराकार जो कि इस पदार्थ के प्रभाव से न्यारा है, इस साकार लोक से बिल्कुल अलग है, उसको जानने के लिए हमें भी उस स्वरूप को समझना पड़ेगा। तो जैसे मैं आत्मा या रूह या प्राण या सोल जो इस शरीर की मालिक, शरीर से अलग हूँ, वैसे ही परमात्मा सुप्रीम सोल, शरीर रहित, लेकिन एक ज्योति पुंज के रूप में इस साकार लोक से परे परमधाम का निवासी है। तो उस लोक को समझने के लिए इस लोक से हमें पार जाना पड़ेगा लेकिन अनुभव से। तब हम परमात्मा को थोड़ा बहुत जान पायेंगे। तो परमात्मा है, निराकार है, लेकिन इन आँखों से दिखाई देने वाली जो भी मूर्तियाँ हैं वो केवल भगवान की संज्ञा वाले हैं, भगवान नहीं हैं।



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

परमात्मा का अस्तित्व

मानते हैं। कटाक्ष के रूप में अगर देखा जाये तो परमात्मा सजीव व निर्जीव दोनों नहीं हो सकता। क्योंकि वो जन्म-मरण से न्यारा कहा जाता है। जबकि राम या अन्य देवतायें या महापुरुषों को शरीर छोड़ते और जन्म लेते हुए दिखाया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि वो निराकार है, अजन्मा है, अकर्ता है, अभोक्ता है, तो वो साकार में कैसे हो सकता है जो वे इन जड़ मूर्तियों में भगवान के अस्तित्व को मान रहे हैं।

परमात्मा और विज्ञान की तुलना

परमात्मा के बारे में विज्ञान क्या कहता है? विज्ञान एक पदार्थ विज्ञान है जो चीजें दिखाई देती हैं, उसकी क्रिया, प्रक्रिया के आधार से अपना निर्णय देता है। विज्ञान कहता है कि हर कार्य के पीछे कोई न कोई क्रिया होती है या एक पदार्थ का अस्तित्व ही क्रिया-प्रतिक्रिया से बनता है। अब प्रश्न उठता है

कर सकते हैं? विज्ञान ये भी कहता है कि जो चीज दिखाई नहीं देती, उसका अस्तित्व कैसा? तो इस पर तर्क है कि जरूरी नहीं है कि जो चीज दिखाई न दे वो हो ही नहीं। जैसे इन आँखों से हम चीजों को देखते हैं तो उसका अस्तित्व मानते हैं लेकिन इन आँखों को खुद देखने के लिए हमें आईने की जरूरत होती है। हम खुद अपनी आँखों को नहीं देख सकते तो क्या आँखें नहीं हैं! इसी प्रकार दूध में मक्खन, दही और घी का अस्तित्व है वो दिखाई नहीं देता, फिर भी हम मानते हैं। ठीक इसी प्रकार लोहे को गर्म देखकर अग्नि का हम अस्तित्व मानते हैं, पत्ते उड़ते हुए या कोई चीज लहरा रही है, उसे देखकर हम हवा का अस्तित्व मानते हैं। दिखाई तो वो भी नहीं दे रही। लेकिन हम मान तो रहे हैं ना! इसलिए विज्ञान ईश्वर के बारे में कोई तर्क दे ही नहीं सकता, क्योंकि वो तो सिर्फ भौतिक चीजों पर जो घटनायें घट रही हैं, उसी को देखता है और मानता है। लेकिन भौतिक चीजों का जन्म

प्रश्न : हिन्दु धर्म में विशेष करके ये माना जाता है कि तुम जैसा कर्म करोगे वैसी योनि में जाकर जन्म लोगे। हो सकता है तुम गधे बन जाओ, कुत्ते की योनि में चले जाओ, साँप, बिछू बन जाओ। तो ये 84 लाख योनियाँ दिखाई जाती हैं विशेष। उससे भी व्यक्ति बहुत उरता है कि कहीं मैं जाकर साँप न बन जाऊँ या गधा न बन जाऊँ। इसके पीछे क्या है कुछ स्पष्ट करें?

उत्तर : पहले तो मैं सभी को ये खुशखबरी सुना दूँ कि गधा, कुत्ता, बिल्ली कोई नहीं बनेगा, साँप भी आप नहीं बनोगे। आप मनुष्य ही बनेंगे। लेकिन जैसे कर्म होंगे वैसी ही उसको देह प्राप्त हो जायेगी। वैसा ही उसको परिवार प्राप्त होगा। वैसी ही सुख-सुविधाएं, कष्ट, अमीरी या गरीबी सब कुछ वैसी ही प्राप्त होगी। इसीलिए मुख्य रूप से अपने कर्मों पर बहुत ध्यान देना चाहिए। हम तो देखते हैं बिल्कुल क्लीयर कोई कुत्ते भी तो कारों में घूम रहे हैं। कई घरों में किसी कुत्ते की भी बहुत अच्छी पालना हो रही है। उनकी बहुत अच्छी खातिरी हो रही है। तो ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि मनुष्य की आत्मा दुःख भोगने जानवरों की योनि में गई। मनुष्य अपने कर्मों का फल मनुष्य योनि में ही भोग रहा है। कोई जन्म से ही भोगना शुरू कर देता है। कोई जन्म लिया और विकलांग है। इसीलिए मनुष्य जैसा कर्म करता है उसी अनुसार वो फल भोगता है, यही सत्य है। अन्त मते सो गते प्रसिद्ध है। जो ज्ञाता हैं, विद्वान हैं वो जानते हैं कि मनुष्य की अन्तिम जैसी फीलिंग होती है वैसा ही उसका नेक्स्ट बर्थ होता है। और अन्तिम फीलिंग कभी भी किसी की जानवर के प्रति नहीं होती। अन्त में कोई भी बन्दर को याद नहीं करता, बिल्ली को याद नहीं करता, साँप को याद नहीं करता। उसे याद आयेगी तो अपने मनुष्य सम्बन्धियों की, अपने बच्चों की या पत्नी की, जिससे उसका बहुत प्यार है, मोह है। या याद आयेगी उसे अपने कर्मों की। तो अन्त में यदि उसकी स्मृति ही जानवरों की तरफ नहीं है वो जानवर योनि में जायेगा कैसे? दूसरी एक चीज जो सबसे गुह्य है। सभी इस बात पर विचार करें दो बीज ले लें एक आम का और एक गेहूँ का। गेहूँ के बीज से चने का पौधा नहीं उगेगा। आम के बीज से जामुन का पेड़ नहीं उगेगा। तो क्या समझा जाये कि उस बीज में ही उस वृक्ष का सबकुछ समाया हुआ है। वो शुरू कैसे होगा, शुरू से एक फाड़ें चलेंगी या एक लम्बी डंडी चलेगी। गेहूँ जिन्होंने देखें हैं वो एक लम्बी डंडी, और चना बोयेंगे तो शुरू से ही फटने लगेंगी कई शाखायें। मतलब उस

बीज में ही सबकुछ समाया हुआ है। अब सूक्ष्मता से चिंतन करें, आत्मा मनुष्य की बिल्कुल अलग और गाय की बिल्कुल अलग। ये दो उदाहरण लेता हूँ

मन की बातें

- राजयोगी ब्र. कु. सूर्य



मनुष्य की आत्मा और गाय की आत्मा। गाय की आत्मा बीज है गाय के शरीर का जिससे निर्माण होगा। अभी मनुष्य की आत्मा गाय के गर्भ में चली गयी तो उसकी आत्मा जो मनुष्य देह का बीज है उससे गाय के बछड़े का निर्माण होगा ही नहीं। क्योंकि उसमें वो संस्कार ही नहीं। क्योंकि आम की गुठली में जामुन के वृक्ष का फल का, फूल का कुछ भी समाया नहीं है वैसे ही मनुष्य आत्मा में किसी जानवर के देह के विकास का कुछ भी समाया नहीं है। इसीलिए मनुष्य आत्मा दूसरी योनियों में जा ही नहीं सकती।

प्रश्न : मैं छत्तीसगढ़ से विजयलक्ष्मी साहू हूँ। मेरी बेटी 25 साल की है। उसको सात साल से रिक्त प्रॉब्लम है। बहुत से डॉक्टरों से ट्रीटमेंट भी करवा चुके हैं लेकिन रिजल्ट कुछ भी नहीं। कृपया कुछ सुझाव दें कि क्या किया जा सकता है?

उत्तर : स्मिन्चुअल प्रैक्टिस आपको सूझा रहा हूँ, आप उसका बहुत अच्छा प्रयोग करें। मेडिकली तो आपने सबकुछ कर ही लिया है। एक तो बहुत अच्छा प्रभाव होता है चार्ज वॉटर का। एक गिलास में पानी लें उसको दृष्टि देकर सात बार संकल्प करेंगे मैं परमपवित्र आत्मा हूँ। अब पानी में ये पवित्र वायब्रेशन चले गए। और सबको ये जानना चाहिए। पवित्रता के जो वायब्रेशन हैं, उसकी जो शक्ति है, वो रोगों को ठीक करने में सबसे बड़ी भूमिका निभाती है। तो पानी पवित्र वायब्रेशन से चार्ज हो गया। अब आधा गिलास तो आप पी लें और आधा लगा लें और अगर मान लो पूरे ही बॉडी में हो गया है एक या आधी बाल्टी को ही चार्ज करके पूरा स्नान ही कर लें। दूसरा सोते

समय जब हमें नींद आने को हो तो हमारा सब्कोन्शियस माइंड एक्टिव हो जाता है। उस समय पाँच बार संकल्प कर लें आप कि मेरी स्किन डिस्सीज बिल्कुल ठीक हो गई है। मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। मैं इस स्किन डिस्सीज से मुक्त हूँ। पाँच बार इस तरह के विचार करते-करते सो जाना है। तो सारी रात सब्कोन्शियस माइंड हीलिंग का काम करता है। और इस बीमारी का निदान करने में बहुत बड़ी भूमिका निभायेगा। तीसरा, अध्यात्म से जो जुड़ा होता है उसको ये पता होता है कि हमारे साथ जो होता है वो हमारे पास्ट लाइफ के कर्मों से जुड़ा हुआ होता है। भले वर्तमान भी कारण हैं, मेडिकली तो जानते ही हैं कि कहीं ब्लड इम्प्योर हो गया। कई कारण हो सकते हैं। इसीलिए 21 दिन तक, इस स्वप्न के साथ कि मैं परमपवित्र आत्मा हूँ और इस देह रूपी प्रकृति की मालिक हूँ एक घंटा अच्छा मेडिटेशन फिक्स कर लें। और इसमें एक अभ्यास और कर लेंगे कि मैं आत्मा यहाँ हूँ और मुझसे प्योर सफेद एनर्जी, ब्रेन में और पूरे शरीर में फैल रही है। थोड़ी-थोड़ी देर भी, एक-एक मिनट में कि मेरी पूरी बॉडी में फैल रहे हैं। जिसे वो सबकुछ क्लीन कर रहे हैं अन्दर में। इसका बहुत ही सुन्दर इफेक्टिव रिजल्ट रहेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल



उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दें



घर पर ही कुछ व्यायाम अपनाकर...

कमर दर्द से यूं मिलेगी राहत...

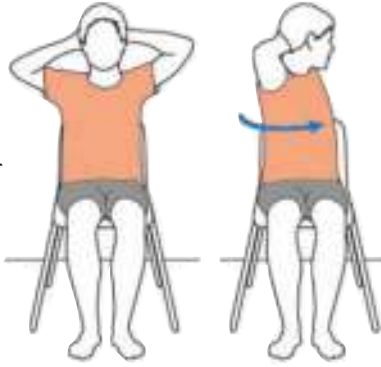
पिरिफॉर्मिस स्ट्रेच

पीठ के बल लेट जाएं और दोनों पैरों के घुटनों को मोड़ लें। अब तस्वीर में दिखाए अनुसार अपने दाएं पैर को बाएं पैर के घुटने के ऊपर (जांघ पर) टिकाएं, जैसे बैठने की अवस्था में रखते हैं। अब अपने हाथों को अपनी बाईं जांघ के पीछे रखें और सीने की ओर तब तक खींचें जब तक आपको खिंचाव महसूस ना हो। इस स्थिति में 30 सेकंड से 1 मिनट तक रहें। सुविधानुसार समय बढ़ा सकते हैं। अब यही प्रक्रिया दूसरी ओर से करें। शुरुआत में 5-5 के सेट करें।



सीटेट रोटेशनल स्ट्रेच

किसी स्टूल या कुर्सी पर बैठ जाएं। पंजों को फर्श पर सपाट रखते हुए ही बैठें। अब हाथों को सिर के पीछे रखें और रीढ़ को एकदम सीधा रखते हुए धीरे-धीरे दाईं ओर मुड़ें। इसी स्थिति में 10 सेकंड तक रुकें, ताकि खिंचाव महसूस हो। दूसरी ओर से फिर यही प्रक्रिया दोहराएं। शुरुआत में दिन में 3-4 बार करें फिर धीरे-धीरे समय बढ़ाते जाएं। इस व्यायाम को दफ्तर में या कहीं भी बैठकर कर सकते हैं।



सुपरमैन स्ट्रेच

जमीन पर पेट के बल लेट जाएं और दोनों हाथों को सामने की ओर फैलाएं। अब पैरों को तस्वीर के अनुसार फैलाकर जमीन पर सपाट रखें। दोनों हाथों और पैरों को उठाएं और उनके बीच लगभग 6 इंच का अंतर बनाने का प्रयास करें। गर्दन दर्द से बचने के लिए सिर को सीधा रखें और फर्श को देखें। जहाँ तक हो सके हाथों और पैरों को बाहर की ओर फैलाएं। इसी स्थिति में 2-3 सेकंड तक रुकें और फिर सामान्य अवस्था में आ जाएं। शुरुआत में 8-10 बार इस प्रक्रिया को दोहराएं।



नी-चेस्ट स्ट्रेच

पीठ के बल सीधे लेट जाएं और दोनों पैरों को भी सीधा रखें। अब दाहिने घुटने को मोड़ते हुए सीने की ओर लाएं। घुटने को सहारा देने के लिए हाथों को अपनी जांघ के पीछे या पिंडली के शीर्ष पर पकड़ें, ताकि घुटना सीने को छू सके। ध्यान रहे कि कमर के निचले हिस्से को सीधा रखना है, उठने नहीं देना है। इस मुद्रा में 30 सेकंड से 1 मिनट तक रहें। दूसरी ओर से भी यही क्रिया दोहराएं। इस व्यायाम के दौरान गहरी सांस लें। शुरुआत में सुविधानुसार 3-4 सेट करें फिर समय बढ़ा लें।



भिलाई-छ.ग. राष्ट्रीय किसान दिवस पर पीस ऑडिटोरियम में अन्नदाता किसान सम्मान समारोह के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. आशा दीदी, किसान भाई तथा उनके परिवार सहित ब्र.कु. प्राची तथा अन्य।



संगारेड्डी-तेलंगाना। राष्ट्रीय किसान दिवस पर सदाशिवपेट में ब्रह्माकुमारीज के ग्राम विकास प्रभाग एवं स्थानिक किसान संगठन के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'किसान सम्मान' कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. सुमंगला दीदी, बहन पील्लोदी जयमां,चेयरमैन,म्युनिसिपैलिटी सदाशिव पेट, राजेश्वर राव देशपांडे,अध्यक्ष,बीजेपी संगारेड्डी निर्वाचन क्षेत्र, राघवेन्द्र रेड्डी,जिला अध्यक्ष,किसान सुरक्षा समिति संगारेड्डी, डॉ. के. शिवप्पा,अध्यक्ष,बीजेपी बीसी मोर्चा तेलंगाना, पृथ्वीराज,अध्यक्ष,तेलंगाना मंजीरा किसान संगठन तथा कमेटी मेम्बर आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



जयपुर-सांगानेर(राज.)। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव पर पवित्र धारणायुक्त माताओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम दीदी,उपक्षेत्रीय निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूजा बहन, मालपुरा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जीत बहन, दूध सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि बहन, ब्र.कु. महेश भाई, माउण्ट आबू से ब्र.कु. राजू भाई तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



कुही-उमरेड(महा.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर ब्रह्माकुमारीज के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पीठासीन अतिथि आर.वी. जारोंडे,तालुका कृषि अधिकारी, वामनभाऊ श्रीरामे,पंचायत समिति उपसभापति, इस्तरी तडेकर,पंचायत समिति सदस्य, एस.एम. ताकसांडे,कृषि विभागीय तंत्र, कविता भातखोरे,तालुका कृषि सुपरवाइजर, ब्र.कु. रेखा दीदी,उमरेड सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. अशोक भाई, ब्र.कु. ज्योति बहन,कुही उपसेवाकेन्द्र संचालिका तथा बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मिर्जापुर-उ.प्र.। किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में मंडलीय क्रीडा अधिकारी श्रीमति भानु प्रसाद, पूर्व कृषि अधिकारी राजेन्द्र तिवारी, प्रदेश के प्रख्यात कवि एवं लेखक आनंद अमित, ब्र.कु. संदीप, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिन्दु तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



समस्तीपुर-बिहार। शिक्षा राज्यमंत्री विजय कुमार चौधरी को स्वर्णिम भारत नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का दिग्दर्शन कराने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कृष्ण भाई तथा ब्र.कु. सविता बहन।



राजगढ़-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा खेरखेड़ी गांव में आयोजित किसान सम्मेलन में ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी बहन, ब्र.कु. वैशाली बहन, भूमि विकास बैंक के रिटायर्ड बैंक मैनेजर अरविंद सक्सेना, जनपद सदस्य शंकरलाल, पूर्व सरपंच एवं पटेल कालूराम जी, ओम उपसरपंच जुगल लववंशी तथा ब्रह्माकुमारीज के डेढ़ सौ भाई-बहनों सहित समस्त ग्रामवासियों ने भाग लिया।



हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। शासन एवं प्रशासन द्वारा किसान दिवस पर आयोजित किसान मेले में संगठन द्वारा सहभागिता करके आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शांता बहन द्वारा किसानों को सम्बोधित किया।



खिंट्टी-ओडिशा। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में 50 किसान भाइयों को सम्मानित करने के पश्चात् गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति शंकरसन पाल तथा लता पाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजली बहन, राजयोगिनी ब्र.कु. तपस्विनी बहन,सेवाकेन्द्र संचालिका,बीजेपी नगर,धुवनेश्वर तथा ब्र.कु. रेणुबाला बहन।



गोपालपुरा-म.प्र.। आजादी के अमृत महोत्सव पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में झाबुआ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जयंती दीदी, पेटलावद सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. भावना बहन, ब्र.कु. सीमा बहन तथा बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मोकामा-बिहार। क्रिसमस के मौके पर मोकामा चर्च में फादर रॉबर्ट जी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा बहन।

प्रधानमंत्री ने किया ब्रह्माकुमारीज के सात राष्ट्रव्यापी अभियानों का शुभारंभ

अभियान के तहत पंद्रह हजार आध्यात्मिक कार्यक्रमों के जरिए 10 करोड़ लोगों तक पहुंचने का लक्ष्य



प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमारा युगों-युगों का इतिहास इस बात का साक्षी है...

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमारा युगों-युगों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि दुनिया जब अंधकार के दौर में थी, महिलाओं को लेकर पुरानी सोच से जकड़ी थी तब भारत मातृ शक्ति की पूजा देवी के रूप में करता था। हमारे यहाँ गाँगी, मैत्री,

अगले 25 साल त्याग-तप-तपस्या के वर्ष..

अगले 25 साल परिश्रम की पराकाष्ठा, त्याग-तप-तपस्या के वर्ष हैं। सैकड़ों वर्षों की गुलामी में हमारे समाज ने जो गंवाया, ये 25 वर्ष का कालखंड उसे दोबारा प्राप्त करने का है। इसलिए आजादी के इस अमृत महोत्सव में हमारा ध्यान भविष्य पर ही केन्द्रित होना चाहिए। हमारा समाज ऐसा समाज है जिसमें नित पुरातन और नूतन व्यवस्था है। समय के साथ

इन सात अभियानों का प्रधानमंत्री ने किया शुभारंभ

- » वैक्सीनेशन अभियान : गांव-गांव में लोगों के लिए वैक्सीन लगाने और जागरूक करने।
- » आत्मनिर्भर किसान : किसानों को यौगिक-जैविक खेती के प्रति जागरूक करने।
- » महिलाएं : नए भारत की ध्वजवाहक अभियान
- » 'अनदेखा भारत' साइकिल रैली।
- » सड़क सुरक्षा के लिए देशभर में 150 बाइक रैली: एक बाइक रैली में 75 बाइक शामिल होंगी। सभी रैलियां 25 हजार किमी की दूरी तय करेंगी।
- » आबूरोड से दिल्ली जाने वाली एक भारत श्रेष्ठ भारत मोटरसाइकिल रैली।
- » युवाओं को सशक्त बनाने के लिए बस यात्रा और स्वच्छ भारत अभियान।

- इन्होंने भी त्यक्त किये विचार

कार्यक्रम में न्यूयॉर्क से जुड़ी संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. मोहिनी बहन ने कहा कि सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे तभी समाज में शांति और सद्भावना आएगी। इस दौरान संस्थान के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर, अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन, संयुक्त मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. मुन्नी बहन,

ब्रह्माकुमारी संस्थान से प्रधानमंत्री के तीन बड़े आह्वान

- नागरिकों में कर्तव्य भावना का विकास करें प्रधानमंत्री ने आग्रह किया कि ब्रह्माकुमारीज जैसी संस्थाएं आने वाले 25 वर्ष के लिए एक मंत्र बना लें कि भारत के जन-जन को कर्तव्य के लिए जागरूक करके बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं। आप सभी अपनी शक्ति और समय, जन-जन में कर्तव्य बोध जागृत करने में जरूर लगाएं। जिस भावना के साथ आप अपनी संस्था में काम करते हैं, उस कर्तव्य भावना का विस्तार समाज, देश, लोगों में हो, ये आजादी के अमृत महोत्सव पर आप लोगों का देश को उत्तम उपहार होगा।
- भारत की सच्चाई को दूसरे देशों के लोगों तक पहुंचाएं प्रधानमंत्री ने ब्रह्माकुमारी बहनों से आह्वान किया कि हमारा दायित्व है कि दुनिया भारत को सही रूप में जाने। भारत के बारे में जो अफवाहें फैलाई जा रही हैं, उनकी सच्चाई वहाँ के लोगों को बताएं, जागरूक करें, ये हम सबका कर्तव्य है। भारत की आध्यात्मिक सत्ता आप सभी ब्रह्माकुमारी बहनें इसी परिपक्वता के साथ निभाएं।
- आत्मनिर्भर भारत को दें गति... उन्होंने आह्वान किया कि सभी आत्मनिर्भर भारत अभियान को भी गति दे सकते हैं। वोक्ल फॉर लोकल। स्थानीय उत्पादों को गति देकर इस अभियान में बहुत बड़ी मदद हो सकती है।

ब्रह्माकुमारीज गांवों के लिए प्रेरणा बन सकती है

प्रधानमंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था अध्यात्म के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि जैसे कई क्षेत्रों में कई बड़े-बड़े काम कर रही है। अमृत महोत्सव के लिए आपने कई लक्ष्य निर्धारित किए हैं। संस्था के प्रयास देश को एक नई ऊर्जा और शक्ति देंगे। खान-पान की शुद्धता को लेकर हमारी बहनें समाज को लगातार जागरूक करती रही हैं। ब्रह्माकुमारीज प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा बन सकती है। ब्रह्माकुमारीज ने तो सोलर पॉवर के क्षेत्र में एक उदाहरण रखा है। कितने ही समय से यहाँ की रसोई में सोलर पॉवर से खाना बनाया जा रहा है। सोलर पॉवर का इस्तेमाल ज़्यादा से ज़्यादा लोग करें इसमें भी आपका बहुत बड़ा सहयोग हो सकता है।

अनुसुईया, अरुंधति और मदालसा जैसी विदूषियां समाज को ज्ञान देती थीं। कठिनाइयों से भरे मध्यकाल में भी इस देश में पत्राधाय और मीराबाई जैसी महान नारियां हुईं। स्वतंत्रता संग्राम में कितनी ही महिलाओं ने अपना बलिदान दिया। किचूर की रानी चैनम्मा, मर्तगिनी हाजरा, रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना झलकारी बाई से लेकर सामाजिक क्षेत्र में अहिल्या बाई होलकर, सावित्रीबाई फुले, इन देवियों ने भारत की पहचान बनाए रखी। आज देश लाखों स्वतंत्रता सेनानियों के साथ आजादी की लड़ाई में नारी शक्ति के इस योगदान को याद कर रहा है।

यह भी बोले प्रधानमंत्री...

- राजयोगिनी दादी जानकी और राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को याद करते हुए कहा कि वह भले शारीरिक रूप से हमारे बीच उपस्थित नहीं हैं, पर उनका मुझसे बहुत स्नेह था। आज के कार्यक्रम में मैं उनका स्नेह और आशीर्वाद महसूस कर रहा हूँ।
- भारत की सबसे बड़ी ताकत ये है कि कैसे भी समय आए, कितना भी अंधेरा छाए, भारत अपने मूल स्वभाव को बनाए रखता है।
- जो लोग जागृत रहते हुए बुराइयों को जान लेते हैं, वह

इनसे बचने में सफल हो जाते हैं। ऐसे लोग अपने जीवन में हर लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

- समाज सुधार के प्रारंभिक वर्षों में ऐसे लोगों को विरोध का सामना करना पड़ता है। कई बार तिरस्कार भी सहना पड़ता है। लेकिन ऐसे सिद्ध लोग समाज सुधार के काम से पीछे नहीं हटते, वह अडिग रहते हैं। समय के साथ समाज उन्हें मान-सम्मान देता है, उन्हें मानता है और उनकी सीखों को आत्मसात् करता है।
- वर्तमान समय सोते हुए सपने देखने का नहीं, बल्कि जागृत होकर अपने संकल्पों को पूरे करने का है।

सूचना निदेशक ब्र.कु. करुणा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने स्वागत भाषण दिया। संचालन एजुकेशन विंग की मुख्यालय समन्वयक ब्र.कु. शिविका बहन ने किया।

- ये भी जुड़े ऑनलाइन

कार्यक्रम में राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र, राजस्थान के तकनीकी शिक्षा मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग, पहलवान रितु फोगाट, निदेशक सुभाष घई सहित देश-विदेश की कई गणमान्य हस्तियों ने भी ऑनलाइन जुड़कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

